शैलसूत्र

जुलाई-सितंबर 2023 ISSN 24558966, पत्रिका पंजीकरण संख्या TELHIN/2008/30044

❖वर्ष-सोलह ❖ अंक-3❖ ❖ जुलाई-सितम्बर- 2023 ❖

सम्पादन परामर्श
डॉ. प्रभा पंत-09411196868
सम्पादक
आशा शैली -9456717150,
8958110859 7055336168,
सह सम्पादक/समन्वयक
चन्द्रभूषण तिवारी
-9415593108/8707467102
सह सम्पादक/शोध प्रबंधक
डॉ. विजय पुरी-09816181836
पवन चौहान-09805402242
विधि-परामर्श
प्रदीप लोहनी-09012417688
प्रचार सचिव
डॉ. विपिन लता 9897732259

विशेष सहयोगी

पंकज बत्रा -9897142223,
सत्यपाल सिंह 'सजग' -09412329561, पीलीभीत
राधेश्याम यादव -80066722221, (लालकुआँ),
निरुपमा अग्रवाल-9412463533,
निर्मला सिंह -9412821608, (बरेली),
दर्शन 'बेज़ार'-आगरा-9760190692,
डॉ. राकेश चक्र -9456201857, (मुरादाबाद),
सूरत भारती, रामपुर बुशहर (हि.प्र.) -09418272934,
कृष्णचन्द्र महादेविया, (मण्डी हि.प्र.) -09857083213,
डॉ. वेदप्रकाश प्रजापति 'अंकुर' (हल्द्वानी) -9412943042,

परामर्शः-

डॉ. श्यामसिंह 'शशि' -09818202120,
डॉ. धनंजय सिंह -09810685549,
डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक', 07906360576

मुख्य संरक्षक :- डॉ. बुद्धिनाथ मिश्र-09412992244/7060004706
संरक्षक **सदस्यः**- शिव बाबू मिश्र -09412750094, अर्श अमृतसरी -07011758133, डॉ. नवीन कुमार श्रीवास्तव -9212444369, प्रकाश चन्द्र लोशाली -9456114762, डॉ. शीना 9249932945, राजकुमार जैन 'राजन' 09828219919, केशव कुमार पटेल-9919352975, डॉ. विमला व्यास-9452780735, डॉ. शीला त्रिपाठी-9453257279, बृजेश चन्द्र श्रीवास्तव -9451023854, अरविंद कुमार यादव -9125628814, श्रीमती ममता पाण्डेय-9453770833, मौजी लाल पटेल-9936380977, ए.के. पवार-9810059715, डॉ. ए.जे. अब्राहम-9447375381, **डॉ. श्रीमती उषा मिश्रा-9450610608, श्री चंदन प्रताप सिंह -7317559999, श्री सर्वेश सिंह शौनक-7007164024, श्री रूप चन्द शर्मा -9935353480,** राम मूरत चौहान-**9415885622,** डॉ. नीतिका नैन -9536379106, राकेश कुमार कुशवाहा -8318525500, हिमांशु कुमार तिवारी-9335183600, मनोज कुमार मिश्र-9935422927, संजीव कुमार मिश्र-9340581505, वीरेंद्र कुमार

1.शैल-सूत्र में प्रकाशित रचनाओं के प्रति सम्पादक का सहमत होना आवश्यक नहीं।
2.लेखक अपने विचार प्रेषण के लिए स्वतन्त्र है।
3. शैलसूत्र परिवार के सभी सदस्यों के पद अवैतनिक हैं।
4.प्रत्येक कानूनी विवाद का निपटारा पत्रिका के सम्पादकीय कार्यालय का विधि क्षेत्र होगा।

सम्पादकीय कार्यालय एवं पत्र व्ययवहार का पता-
-साहित्य सदन, इन्दिरानगर-2
पो.-लालकुआँ, जिला-नैनीताल (उत्तराखण्ड) पिन-262402
मो.-09456717150,7055336168,
□□□□□□□□□□□.□□□□□□□@□□□□□.□□□

स्वामी, प्रकाशक, तथा मुद्रक आशा शैली (इन्दिरा नगर-2, लालकुआँ, जि. नैनीताल) ने एच.जे. इंटरप्राइजेज़, खानचन्द मार्केट, हल्द्वानी (नैनीताल) से मुद्रित कराया। सम्पादक आशा शैली (इन्दिरा नगर-2, लालकुआँ, जि. नैनीताल-262402)

क्षेत्रीय सहयोगी

हिमाचल प्रदेश-

1. Dr. L.C. Sharma, IIRD Complex, Bye-pass Road, shanan, Sanjauli, Shimla-6 (H. P.)
mo. 09418014761

□□□□□□□□@□□□□□□.□□□

2. श्री कृष्ण चन्द्र महादेविया
गाँव महादेव, तह. सुन्दर नगर,
मण्डी (हि.प्र.) 175018

3. डॉ. विजय पुरी,
ग्राम पदरा, डा. हंगलोह, त. पालमपुर,
जि. कांगड़ा (हि. प्र.)

4-श्रीमती शिवा धरावेश,
20/7, दुर्गा कालोनी तरुवाला, पाँवटा साहिब,
जि. सिरमोर -173025 (हि.प्र.) 08894892999

5. रमेश कालिया,
ग्राम साथना, तह. फतहपुर, जिला कांगड़ा (हि.प्र.)
पिन176025, मो.8894670051

6. चन्द्रभूषण तिवारी
ग्राम टी.टी.अब्दलपुर, डाकघर हरिसेन गंज,
(मऊआईमा) प्रयागराज-212507
मो. 9415593108, 8707467102

□□□□□□□□□04091966@□□□□□□.□□□

7. दिनेश पाठक 'शशि'
28, सारंग विहार, रिफ़ाइनरी नगर, मथुरा
9412727361, ईमेल- □□□□□□□□□57@□□□□□□.□□□

8. अंजना छलोत्रे 'सवि',
जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन,
द्वितीय तल, भोपाल-39 (म.प्र.)
मो. 08461912125

□□□□□□.□□□□□@□□□□□□.□□□

9. श्रीमती पूर्णिमा ढिल्लन
फ्लैट नं.-401, बिल्डिंग-5, अशोक अस्टोरिया,
गोवर्धन विलेज, गंगापुर रोड, नासिक-422222
मो. 7767943298

10. केरल
Dr. A. J. Abraham,
ANCHANIYIL A.K.G. Unichira road,
Changampuzha nagar, post- Kochi-33',
Kerala. **9497815730**

11- Dr. Sumangala Mummigati
'Chinmay' 4th Cross, Shreepad Nagar,
Near Rani Chennamma Nagar,
Dharwad, Karnatak. 7619164139

विधा	**लेखक**	**पृष्ठ**
धरोहर		
हैं के थे	**-मंगल नसीम**	**5**
कहानियाँ		
वह आवारा शॉल	-श्रवण कुमार उर्मलिया	7
मैं फिर लौट के आऊँगा	**राजेश्वरी जोशी 'पंत'**	**10**
यात्रा वृत्तांत -		
रुद्रनाथ : एक अद्भुत साहसिक यात्रा ...	डॉ उमेश प्रताप वत्स	15
शोध		
समकालीन हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त किन्नर संघर्ष	रामेश्वर महादेव वाढेकर	19
लघुकथाएँ		
अधूरी इच्छा	-आकांक्षा यादव	25
स्टेटस सिंबल-शुचि 'भवि', मजदूर दिवस	**-रश्मि सिंह**	**26**
तेरी बिंदिया रे	-रश्मि लहर	27
शोध		
मणिपुर के नुपी लैन (नारी-संघर्ष) में हिजाम इराबत का योगदान	-डॉ. येंखोम हेमोलता देवी	28
काव्यणारा		
अंजना छलोत्रे की दो ग़ज़लें		**33**
खेत की कोख -सूर्य प्रकाश मिश्र, कब तक धीर धरूँ	-महेश शर्मा	34
कविता		
मैं कृष्ण बोल रहा हूँ	**-राजकुमार जैन राजन**	**36**
अनुवादित कविताएँ	**-डॉ. रूपचन्द्र शास्त्री 'मयंक'**	**37**
मौन वृक्ष-बबिता ओबेराय, मैं जीना चाहती हूँ	**-प्रतिमा पुष्प**	**38**
समसामयिक		
मणिपुर में क्यों भड़की हिंसा?	**-डॉ बुद्धिनाथ मिश्र**	**39**
भारत दर्शन		
प्रकृति का स्वर्गः अण्डमान...	**-कृष्ण कुमार यादव**	**42**
नोस्टैलिजया पर आधारित.......	**-डॉ शशि प्रभा**	**49**

भारत के दक्षिण में एक से एक अद्भुत मंदिर, स्थापत्य कला का बेजोड़ खूबसूरत उदाहरण हैं। सातवां-आठवां सब आश्चर्य... लेकिन हमें ताजमहल ही पढ़ाया, बताया, रटाया गया था। आश्चर्य!

वर्ष 2023! भूतो न भविश्यति!

जी हाँ! भारत के लिए यह वर्ष भरत के लिए अविस्मरणीय ही रहा। हर दृटि से ही। न तो ऐसी भीषण बर्बादी देखी और न ही ऐसे उत्सव।

कल क्या होगा, यह तो भविष्य के गर्भ में है, परन्तु आज जो हुआ और जो हो रहा है वह भारत के लिए परियों के सपने जैसा ही लग रहा है। इस तिमाही में घटनाओं का तेजी से घटना अपनेआप में महत्वपूर्ण रहा। हिमाचल जैसे पहाड़ी क्षेत्रों में भारी वर्षा और पहाड़ी नदियों की बाढ़ के कारण हुई भीषण जन-धन हानि, राजनैतिक उठापटक सभी कुछ स्तब्ध करने वाला था। वर्षा और पहाड़ी फसलों का एक ही समय होने के कारण इस बार की भयानक वर्षा ने जहाँ भारी जन-धन हानि की वहीं सेब-नाशपाती, आड़ू-खुबानी आदि की फसलों को भी प्रभावित किया। स्थान-स्थान पर राजमार्गों के अवरुद्ध होने के कारण हिमाचल की अर्थ व्यावस्था को भारी क्षति का सामना करना पड़ा है, जिससे उबरने में हिमाचल को कई साल लग जाएँगे।

हिमाचल के मण्डी शहर में एक समृद्ध हिन्दी कार्यक्रम से लौटते ही उस शहर को भीषण जलप्लावन से जूझते देखना दिल दहला देने वाली घटना थी। इतनी लम्बी आयु में मैंने बस 2002 में रामपुर में हुए जलप्लावन को देखा ही नहीं, बस सुना मात्र था परन्तु वह कुछ ही घण्टों की घटना थी। किन्तु इस बार का जलप्लावन न भूलने वाली घटनाएँ है, जिन्होंने हिमाचल की चूलें हिलाकर रख दी है। अंधाधुंध कटते वृक्ष, कच्ची-पक्की घाटियों में होने वाले वैध-अवैध निमार्ण के लिए आँख मूंदकर कटते पहाड़ क्या इसके लिए उत्तरदायी नहीं? प्रकृति को इतना कुपित कभी नहीं देखा, पर क्या मानव समाज इससे कुछ सीख लेगा? लगता तो नहीं है। थोड़े दिनों बाद सब पूर्ववत् चलता दिखाई देगा, क्योंकि आज का मानव इतना अधिक सुविधाभोगी हो गया है कि उसे अपनी सुविध से आगे का कुछ भी दिखाई देना बंद हो गया है। परन्तु यह भी सत्य है कि परिवर्तितन सृष्टि का नियम है और मनुष्य उसी के हिसाब से चलता है।

इस वर्ष की सबसे बड़ी और मुख्य घटना भारत का जी-20 उत्सव रहा। गणतन्त्र और स्वतन्त्रता उत्सव में भी विदेशी अतिथि भारत आते ही रहते हैं, परन्तु जी-20 में तो समूचे विश्व से आने वाले अतिथियों के कारण यह उत्सव विशेष बन गया। भारत मण्डपम् ने जहाँ अतिथियों के हृदय पर भारतीय संस्कृति की अमिट छाप छोड़ी है वहीं राष्ट्रपति द्वारा दिए गये भोज का बाहिष्कार करके कुछ लोगों ने अपनी बीमार मानसिकता का परिचय भी दिया। इसपर भी रात्रिभोज में परोसा गया शुद्ध शाकाहारी भोजन भारत की छवि को उज्ज्वल बनाने में विशेष सहायक रहा। यहाँ भी चीन और कुछ अन्य देशों का भारत विरोधी रवैया साफ दिखाई दे रहा था, उस पर भी हमारे जांबाज सैनिक अधिकारियों का इस तरह मारा जाना गम्भीर चिन्ता का विषय है, फिर भी हमें अपने सैन्यबल और नेतृत्व पर भरोसा है, कि इसका परिणाम शत्रु के सामने आ ही रहा है। देश के भीतर और देश के बाहर हर मोर्चे पर फैले दृश्य-अदृश्य जाल सत्तासीन लोगों को ही काटने होते हैं और हमें पूरा विश्वास है कि हमारा नेतृत्व इस में सफल होगा। यह समय भारत के लिए बहुत बड़ी परीक्षा का समय है, जब परशुराम की तरह शास्त्र और शस्त्र दोनों के महत्व को समझना होगा।

-आशा शैली

हैं के थे

–मंगल नसीम

मुट्ठियों में काँच के टुकड़े दबाकर देखिये
जब लहू रिसने लगे तो मुस्कुरा कर देखिये
–सर्वेश चन्दौसवी

हमारे साहित्य–जगत के इतिहास में एक 'न भूतो न भविष्यति' चमत्कार का नाम है, सर्वेश चन्दौसवी। बहुमुखी प्रतिभा के धनी सर्वेश चन्दौसवी तक़रीबन तमामतर अस्नाफ़े–सुख़न–ग़ज़ल, नज़्म, गीत, रुबाई, दोहा, माहिया, मुख़म्मस, तज़मीन, कहानी, लघुकथा ग़रज़ कि साहित्य की लगभग प्रत्येक विधा पर मिसाली महारत रखते थे। साहित्य से अलग की उनकी ज़ाती ज़िन्दगी में भी अच्छे से अच्छे शतरंज के खिलाड़ी, ढोलक मास्टर, नाट्यकर्मी और पाक–शास्त्री उनके सामने पड़ने से कतराते थे। सूखी अरबी की सब्ज़ी और उड़द की धुली दाल के शौक़ीन नहीं बल्कि लती सर्वेश जी साहित्य–सृजन में तो बला के ज़ूदगो (पुरानी रिवायती ग़ज़ल) थे, और उस ज़ूदगोई का आलम ये रहा कि हज़रत के जी में छपने की आई, तो मौसूफ़ की सन् 2014 में 14, सन् 2015 में 15, सन् 2016 में 16, सन् 2017 में 17, सन् 2018 में 18, सन् 2019 में 19 और सन् 2020 में 20 किताबें लगातार सात साल तक हर साल प्रकाशित होकर मंज़रे–आम पर आती चली गईं। यानी साल दर साल बिना किसी विराम के लगातार 119 किताबें, और वो भी अलग–अलग मौज़ूआत पर! और उनके इस लामिसाल तवारीख़ी कारनामे के तईं 'लिम्का बुक ऑफ़ रिकार्ड्स ने उन्हें सम्मानित किया। तमाम दुनिया के किसी भी साहित्य में ऐसी दूसरी मिसाल मौजूद नहीं है। निःसन्देह सर्वेश जी अपनी तरह के अकेले ही शाइर थे। बिलशुब्ह बेमिसाल शख़्सियत।

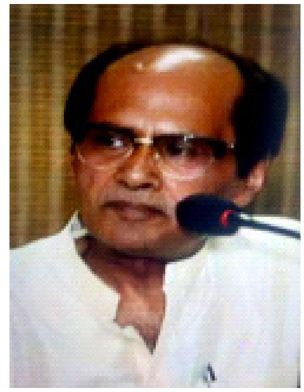

एकदम पारदशह्न व्यक्तित्व। रिश्तों में भी बेलाग, आर–पार वाला फ़ल्सफ़ा उनका विशेष परिचय था। लगाव और अलगाव दोनों ही में सामने वाले को मार रखते थे। 'जैसे को तैसा' की कहावत को चरितार्थ करने में मुकम्मल यक़ीन रखने वाले सर्वेश जी किसी भी मुआमिले को 'ऑन द स्पॉट' ही निबटा देने के जबर्दस्त हिमायती थे। सचमुच अपने आप में अनूठे, अलमस्त फ़क़ीराना तब्अ अदीब सर्वेश जी अपनी मिसाल आप ही थे।

एक बार––

एक मुशाइरे में, सर्वेश जी बहैसियत मेहमाने–ख़ुसूसी (मुख्य–अतिथि) स्टेज पर तशरीफ़ फ़र्मा थे। मुशाइरा अपने चरम पर पहुँच चुका था। नाज़िमे–मुशाइरा ने एक जवांसाल मुतरन्नुम शाइर को कलाम पढ़ने को मदऊ (आमन्त्रित) किया। नौजवान शाइर साहब माइक पर तशरीफ़ लाए और बेहद ख़ुशगवार तरन्नुम से ग़ज़ल पढ़ने लगे। शाइर के तीसरे शे'र तक पहुँचते–पहुँचते सर्वेश जी अपना माथा पकड़ चुके थे, क्यूँकि शाइर साहब सर्वेश जी की एक मशहूर ग़ज़ल की रदीफ़ 'हैं' को 'थे' से तब्दील करके, हर शे'र सर्वेश जी का ही, ज्यूँ का त्यूँ पढ़ रहे थे! शाइरे–नौउम्र अपनी सात शे'री ग़ज़ल पढ़ कर और उसपे बेहिसाब दाद लूट कर वापस अपने गाव–तकिये की जानिब लौट ही रहे थे कि सर्वेश जी ने सुर्ख़रू शाइर को अपने क़रीब आने का इशारा किया। नौजवां शाइर कुछ ख़ास दादो–तहसीन की उमीद लिए मेहमाने–ख़ुसूसी के हुज़ूर में आ खड़ा हुआ। सर्वेश जी ने बड़े प्यार से शाइर साहब के काँधे पर हाथ रखते हुए दरयाफ़्त किया,

'साहिबे-मन! ये ग़ज़ल आपने कहाँ से पायी?" नौजवां ने मेहमाने-मोहतरम के सवाल से ज़रा-सा भी न घबराते हुए तपाक से जवाब फ़र्माया,

''मोहतरम! अगर इस ग़ज़ल को आप अपनी ग़ज़ल बताने जा रहे हैं तो मैं क़ब्ल ही अर्ज़ कर दूँ कि मैं आपकी गज़ल कई बार पढ़ चुका हूँ। आपकी ग़ज़ल की रदीफ़ 'हैं' है और मेरी ग़ज़ल की रदीफ़ 'थे' है।"

सर्वेश जी ने अपनी जलती-बलती आँखों से पर्याप्त समय तक नौजवान शाइर का रुख़े-रौशन मुलाहिज़ा फ़र्माया और फिर किसी बहुत पहुँचे हुए भविष्यवक्ता की तरह उसे उसका भविष्यफल बताया,

''बरख़ुर्दार! अगर आपने इस ग़ज़ल को आइन्दा कभी, कहीं दोबारा पढ़ा, तो आप ख़ुद भी 'हैं' के 'थे' कर दिए जाएँगे।"

अज़ीज़ो! सैंकड़ों क़ाबिले-ज़िक्र शागिर्दों का तलामिज़ा (शिष्य-परिवार) रखनेवाले उस्ताद, विलक्षण व्यक्तित्व सर्वेश चन्दौसवी जी के परम् यशस्वी नाम से पहले 'स्वर्गीय' लिखते कलेजा मुँह को आता है, लेकिन अज़हद तस्कीन का बायस है कि उनके सभी शागिर्द, मख़्सूस तौर पर अज़ीज़ी प्रमोद 'असर' और राजेन्द्र 'कलकल' अपने उस्तादे-मोहतरम की थमाई मश्अल को थामे, बेहद सधे और मज़बूत क़दमों से राहे-अदब में गामज़न हैं।

–

amritprkashan55@gmail.com

रिश्ता पनघट-पायल का
पेड़ न जाने पीपल का

मुजरिम निकली लड़की एक
भेद खुला जब पागल का

कौन तआक्क़ुब में जाए
वो टुकड़ा है बादल का

उसने मेरे ख़्वाबों में
रंग भरा हल्का - हल्का

उसकी आँखों का साग़र
अब छलका - छलका

वो दिल्ली की ओर गया
ये रस्ता है चम्बल का

कुछ लाशों पर ख़त्म हुआ
झगड़ा पानी के नल का

--सर्वेश चन्दौसवी

वह आवारा शॉल

-श्रवण कुमार उर्मलिया

समय गुज़र जाता है पर सुधियाँ ठहरी रह जाती हैं। जीवन नदी की तरह बहता रहता है और उम्र के विभिन्न पड़ावों पर ये सुधियाँ नदी के किनारे ठहरे हुए पत्थरों की तरह जड़ीभूत होकर जमी रह जाती हैं। लाख कोशिश करो पर ये सुधियाँ टस से मस नहीं होतीं। जीवन रूपी नदी तो आगे ही आगे बढ़ती रहती है पर ये सुधियाँ हमें समय की जंजीरों जे मुक्त नहीं होने देती हैं। बक़ौल बहन सविता शर्मा- 'एक न पग पीछे जाती, उमर हठीली इतनी होती।' पर यादों के गलियारे में हम जितना चाहें, पीछे जा सकते हैं और अपनी सुधियों को सहला सकते हैं, दुलरा सकते हैं। हम जितना चाहें उतना समय अपनी सुधियों के साथ बिता सकते हैं, कहीं न कोई बंधन होता है न समय सीमा। वास्तव में ईश्वर ने हम सभी के मन को एक सुधियों में प्रवेश करने वाली नायाब टाईम मशीन दे रखी है जिसके सहारे हम जब चाहें अपनी सुधियों में विचरण कर सकते हैं।

उसे शायद सुधियों का यह तिलिस्म मालूम था इसलिए बिछड़ते समय उसने बड़ी लापरवाही से ज्ञान दिया था,

''मिलना-बिछड़ना इंसान की नियति होती है पर हमें इतना निर्विकार होने की कोशिश करनी चाहिए कि मिलन में खुशी और जुदाई में पीड़ा के अतिरेक से बच सकें।'' हालांकि वह इस बात को भी अच्छी तरह से जानती थी कि बचपन से लेकर बड़े होने तक का उम्र का जब एक लंबा हिस्सा किसी के साथ बिताया जाता है तो उससे बिछुड़ना हृदय की वीथियों में व्यथा के कैक्टस रोप ही देता है। वर्षों तक साथ चलते हुए यदि दो प्राणियों को अचानक उम्र के किसी पड़ाव पर अपने अपने रास्ते बदलने पड़ जाएँ तो वह घनीभूत पीड़ा बयान से परे होती है।

मैं बंगला संस्कृति के बीच ही जन्मा और पला-बढ़ा था, सारे मित्र बंगाली थे। एक साथ दो-दो संस्कारों का वहन करने का सौभाग्य मिला था मुझे। एक तरफ मेरी अपनी मातृभाषा की संस्कृति-संस्कार और दूसरा बंगाली भाषा के संस्कार। लिखने-पढ़ने का शौक़, कैरम, शतरंज, ताश और फुटबाल खेलना, नाटकों (जात्रा) में रुचि, दुर्गा पूजा और काली पूजा में आस्था सब बंगाली संस्कृति की देन थी जो अब तक बरकरार है, जीवन के एक अभिन्न अंग की तरह। यहाँ तक कि बंगला भाषा भी तभी से मेरी मातृभाषा जैसी ही रही है। अच्छी तरह से बोलना, लिखना और पढ़ना सीख गया था मैं। हर वर्ष काली पूजा में मैं भी अपने मित्रों के साथ रात भर जागता था।

वह 1966 की काली पूजा थी। मैं आठवीं में पढ़ता था उन दिनों। उम्र के उस पड़ाव पर वय:संधि की अवस्था दस्तक दे चुकी थी। उन दिनों स्कूल में तिमाही परीक्षा के बाद दुर्गा पूजा के समय 24 दिनों की फ़सली छुट्टी हुआ करती थी जो काली पूजा के बाद तक चलती थी। मौसम का कालचक्र भी कुछ ऐसा था कि सितंबर का महीना लगते ही गुलाबी ठंड शुरू हो जाती थी। हवा के द्वारा हृदय को अनुरागभरे नर्म-नाज़ुक संदेश मिलने लगते थे

जिसे आत्मा की गहराइयों से महसूस किया जा सकता था। काली पूजा आते-आते ठंड बहुत बढ़ जाया करती थी।

काली पूजा की उस रात भी बहुत ठंड थी। उसने मुझे दूर से देखकर ही अनुमान लगा लिया था कि मुझे ठंड लग रही है। मेरे लिए उसका वहाँ होना ही एक सुखद अहसास था। मन में एक अजीब सी गर्माहट महसूस हो रही थी। पर ठंड के साथ शरीर समीकरण बैठा नहीं पा रहा था। न जाने किस प्रेरणा के वशीभूत होकर वह मेरे पास आ थी और बिना कुछ कहे उसने अपना गर्म शॉल मुझे उढ़ा दिया था। भरी-पूरी ठंड में मुझे ऐसा महसूस हुआ था जैसे दुनिया की कोई भी ठंड उस उस शॉल की गर्माहट को मात नहीं दे सकती। कहीं न कहीं मेरे अवचेतन में वह गर्माहट हमेशा के लिए स्थायी हो गई थी।

हालांकि वह सबकी नजरें बचाकर आई थी पर मैं जानता था कि उसकी सहेलियों ने सब कुछ देख लिया होगा। जहाँ पर मैं था, वहाँ रोशनी की कमी नहीं थी। मैंने पूछा--''आर तुमि कि कोरबे (और तुम क्या करोगी) ?" वह बेफिक्री से बोली--?

''आमि कोनो बंधुर शॉले लुकीय जाबो (मैं किसी सहेली की शॉल में छिप लूँगी)।" ?

मेरे मन से मेरा संशय भी फूट पड़ा था--''तोमार बोंधुरा निश्चोय देखे नियेछे। जोदि ओरा तोमार माँ-बाबा के बोले देबे तोबे (तुम्हारी दोस्तों ने निश्चय ही देख लिया है। यदि वे तुम्हारे माँ-पिताजी को बता देंगी तो) ?"

उसने चेहरे पर गंभीरता ओढ़ते हुए कहा था--''मुझे भी इसी बात का डर है, बुद्धू! मेरे माँ-बाबा को मालूम हो गया तो वे कहीं वे तुम्हारे साथ मेरी शादी न करा दें।" कहकर वह अपनी मादक हँसी बिखेरती हुई वापस अपनी सहेलियों के पास चली गई थी।

सुना था और फिल्मों में देखा भी था कि प्यार करने वाले एक दूसरे को अपना दिल देते हैं। उसने मुझे शॉल दिया था। उस पूर्व वय:संधि की नाज़ुक उम्र में मुझे लगा जैसे उस शॉल में ही कहीं उसका दिल भी लिपटा हुआ है। उसके नश्वर शरीर से लिपटा हुआ शॉल अब मेरे नश्वर शरीर से लिपटा हुआ था और उस ठण्ड में मुझे गुनगुने अहसास से भर रहा था। जाने क्यों मुझे लग रहा था कि न उसका शरीर नश्वर है न मेरा। बल्कि इनके अलावा बाकी सब कुछ नश्वर और नगण्य है। उस आवारा शॉल ने श्रद्धेय से श्रद्धालु तक का सफ़र पूरा कर एक इतिहास रच दिया था। मुझे लगा, वह हमेशा से मेरे लिए श्रद्धेय रही थी और मैं एक श्रद्धालु था, उसकी श्रद्धा का याचक था।

उन दिनों हम गहरे संस्कारों से बंधे रहते थे। मन की भवनाओं को व्यक्त करना वर्जित हुआ करता था। पर आज के सन्दर्भ में उन भावनाओं को व्यक्त करना चाहूँ तो मुझे लगा था जैसे वह शॉल नहीं बल्कि उसका मधुर आलिंगन हो। ठंड भरी अमावस्या की उस काली रात में वह मुझे बहुत रहस्यमय लगी थी। पर कहीं न कहीं मैं ख़ुद को भी बहुत रहस्यमय लगने लगा था। उस रात का वह जागरण बहुत सार्थक हो गया था और उस शॉल के रूप में जैसे मुझे काली माँ का आशीर्वाद ही मिल गया था। सारी रात उसकी सहेलियाँ रहस्यमय ढंग से मुस्कराती और उसे छेड़ती रही थीं।

लग रहा था वह रात ख़त्म ही न हो पर सुबह का उजाला हुआ तो सब अपने अपने घर लौट गए थे। मुझे उम्मीद थी कि जाते समय वह अपना शॉल वापस लेने आएगी। सच कहूँ तो मैं उसके इंतज़ार में भी था। पर मेरे मन के भीतर कहीं दबी-छिपी सी यह इच्छा भी थी कि काश! वह अपना शॉल वापस न मांगे। जब वह बिना शॉल लिए घर चली गई तो मुझे लगा था जैसे मेरे मन की इच्छा पूरी हो

गई हो। पर बहुत बाद में मुझे आभास हुआ था कि जानबूझकर ही उसने अपना शॉल मुझसे वापस नहीं लिया था। क्योंकि वह भुल्लकड़ तो बिलकुल भी नहीं थी।

कई दिनों तक वह शॉल मेरे पास हिफाज़त से रखा रहा था। मैंने उस शॉल में इत्र छिड़क दिया था ताकि ख़ुशबू उस शॉल को रोमांटिक बना दे। उससे क बार मेरी भेंट होती पर वह शॉल का कभी ज़िक्र न करती। पर मेरे हृदय में एक दुविधापूर्ण स्थिति जरूर उत्पन्न हो ग थी। कभी मेरा हृदय चाहता कि वह शॉल को भूल जाय। अगले ही पल हृदय में भाव उमड़ते कि कहीं वह अपना शॉल भूल तो नहीं जाएगी? पर जिस दिन उसे हॉस्टल लौटना था, वह मेरे घर शॉल लेने आई थी। उसने शॉल वापस माँगा तो बड़ी तक़लीफ़ हुई। लगा जैसे अपना दिल वापस मांग रही हो। पर शॉल तो लौटाना ही था। शॉल उसे पकड़ाते हुए मैंने कहा--''कुछ दिन और मेरे पास रह लेने देती?"

वह बोली--''अगले साल की काली-पूजा तक इंतज़ार करो, बुद्धू।" और वह शॉल लेकर चली गई थी। आवारा शॉल इस बार श्रद्धालु से श्रद्धेय के हाथों में चला गया था।

अगले वर्ष वह आगे की पढ़ाई करने के लिए अपने बड़े भाई के पास चली गई थी। उस वर्ष भी दशहरा और दीवाली उसी जोश से मनाए गए थे पर मेरे लिए जैसे हर उत्सव वीरान था, हर त्योहार सन्नाटों से भरा हुआ था। तब शायद हम दोनों ही नहीं जानते थे कि हर जीवन की अपनी-अपनी गति होती है, अपनी-अपनी नियति होती है। हम दोनों ही जान गए थे कि जीवन रूपी नदी का प्रवाह शांत और मंथर नहीं होता है। बल्कि उसमें बड़े-बड़े भंवर होते हैं जिसमें हम अपनी इच्छाओं और आकांक्षाओं समेत डूबने-उतराने लगते हैं। हमारे वश में बस इतना होता है कि हम किसी को लेकर सपने बुन लें। हमारे बुने हुए सपने पूरे होंगे कि नहीं, यह हमारे वश में नहीं होता है। हम दोनों की जीवनधारायें अपने अपने प्रारब्ध का अनुसरण कर एक दूसरे से विलग हो गई थीं। हमारे अलग-अलग परिचय हो गए थे, अलग-अलग अस्तित्व हो गए थे।

कुछ वर्ष पहले वह हमसे मिलने आई थी। साथ में उसके पति और बेटा भी थे। उसके साथ थोड़ा एकांत मिला तो मैंने उससे कहा था--''अब जबकि हमारा अभिन्न जीवन भिन्न-भिन्न हो गया है तो तुमसे एक सवाल पूछने का दुस्साहस कर सकता हूँ क्या?"

अपने व्यथित स्वरों में उसने जवाब दिया था--''अब तो सिर्फ़ एक दूसरे से सवाल पूछने का ही विकल्प बचा है। मैं तुम्हारा यह अधिकार क्यों छीनना चाहूँगी, बोलो?"

उसकी पीड़ा से भीतर तक आहत होते हुए भी मैंने पूछा था, ''उस रात तुमने मुझे वह शॉल क्यों उढ़ाया था?"

उसने सीधे मेरी आँखों में देखते हुए कहा, ''तुम तो एकदम बुद्धू हो। आजतक यह सवाल अपने आप से चिपकाए बैठे हो। मैं जानती थी, तुम कभी न कभी यह सवाल मुझसे जरूर पूछोगे और मैं यह भी जानती थी कि मेरे पास को उत्तर नहीं होगा।"

वर्षों बीत गए हैं पर वह शॉल मेरे मन की संदूकची में फ्रीज़ होकर पड़ा हुआ है। शीत के आते ही मुझे अपनी सुधियों में उस शॉल की गर्माहट महसूस होने लगती है।

19/205 शिवम खंड, वसुंधरा,
गाज़ियाबाद-201012
मोब. 9999903035

मैं फिर लौट के आऊँगा

राजेश्वरी जोशी 'पंत'

''राजेश तुम कब आए छुट्टी?' सुधा ने हँसते हुए कहा।

''दीदी कल ही आया हूँ। आप कैसी हो?''

''अच्छी हूँ रे, बहुत अच्छी और तुम कहो, तुम कैसे हो? कैसा लग रहा है सियाचिन की ठंड में?''

''अरे दीदी बड़ा मज़ा आता है। चारों ओर बर्फ़ ही बर्फ़ पड़ी रहती है। कई-कई फुट मोटी बर्फ़ की पर्त फैली होती है चारों ओर। बर्फ़ के तूफ़ान चलते रहते हैं, ज़रा पैर सँभाल के ना चलो तो, बर्फ़ कब कहाँ से धसक जाए। कब कहाँ जिन्दा समाधि बन जाए पता ही नहीं।'' राजेश ने हँसते हुए कहा।

''तुझे डर तो नहीं लगता?'' सुधा ने राजेश को चिढ़ाते हुए कहा।

''अरे नहीं दीदी। बर्फ़ से ढके पहाड़ तो मुझे तपस्यारत संत लगते हैं। चारों और शांति ही शांति।'' राजेश ने हँसते हुए कहा।

''अरे तू तो कवि हो गया है रे। पहाड़ों ने तो तुझे कवि बना दिया है। बस अपना ख्याल रखना। इतना विपरीत मौसम होता है तुम कैसे रह पाते हो वहाँ?

''अरे दीदी! हम भारतीय सैनिक हैं, हम डरते नहीं। भारतीय सेना हमारा बहुत ख्याल रखती है। हमें इस तरह की ट्रेनिंग दी जाती है कि हम हर विपरीत परिस्थिति में भी खुश रहते हैं। भारतीय फौज सबसे अनुशासित फौज है और दीदी! तुम्हें पता है, सियाचिन पोस्ट विश्व की सबसे ऊँची पोस्ट है। यह पाकिस्तान बार्डर पर है। हम भारतीय सिपाही हैं। मेरा बस चले तो मैं दुश्मन को ऐसा सबक सिखाऊँ कि वह मेरे देश की तरफ आँख उठाने की हिम्मत ना करे।'' कहते हुए राजेश के चेहरे पर देशभक्ति की चमक थी। उसका गोरा चेहरा कठोरता से भरा हुआ था, जैसे अगर अभी दुश्मन आ जाए तो उसको सही कर देगा।

''पर तुम अपना ख्याल रखना भाई।'' सुधा ने आँसू पोंछते हुए कहा, ''कितनी कठिन परिस्थितियों में रहते हैं मेरे ये भाई।''

''दीदी आप चिन्ता मत करो। अगर हम देश की रक्षा नहीं करेंगे तो फिर कौन करेगा? देशवासी सुरक्षित रहें इसके लिए किसी ना किसी को तो कठिनाइयाँ झेलनी ही पड़ेंगी। फिर हम तो सैनिक हैं अगर हमारी जान देश के काम आ जाए, तो इससे बड़ा ईनाम हमारे लिए और क्या होगा?'' राजेश कहीं खोया-खोया सा कह रहा था।

''हट पगले यह मरने की बात क्यों करता है। तू मेरा बहादुर भाई है दुश्मनों से जीत कर और रिटायरमेन्ट लेकर ही तू घर आएगा। देख, पापा और दादाजी भी तो फौज में थे। अपनी सर्विस पूरी कर के घर आए थे।'' सुधा ने उस समझाते हुए कहा।

''दीदी मैं मरने से नहीं डरता। मेरे तो खून का एक-एक कतरा मेरे देश के लिए है। मैं जीऊँ भी तो देश के लिए और मरूँ भी तो देश के लिए। मैं तो चाहता हूँ कि एक बार आमने-सामने की लड़ाई हो और मैं इन दुश्मनों को ठीक कर दूँ, पर यह सीधे-सीधे सामने कहाँ आते हैं। यह तो आंतकवादियों का अदृश्य वेश धारण कर मेरे देश को परेशान कर रहे हैं और कितने बहादुर सिपाही

इस छद्म युद्ध में मर रहे हैं। मेरा तो इन देश के दुश्मनों को देखकर खून खौलने लगता है।'' राजेश गुस्से से तमतमा रहा था।

सुधा ने माहौल को बदलते हुए कहा, ''राजेश तू तो बहुत स्मार्ट हो गया है रे। लम्बा, चौड़ा गबरू जवान। दो चार दुश्मनों को तो तू ऐसे ही उठा के पटक देगा।''

''अरे दीदी आप भी मुझे बुद्धू बनाने लगीं। मैं कहाँ स्मार्ट हूँ।'' कुछ झेंपता हुआ-सा राजेश बोला।

''अच्छा जरा एक नेपाली गाना तो सुना। बहुत दिन हो गए तेरा गाना ही नहीं सुना। बहुत याद आता है तेरा गाना।''

''हे....ऽ...ऽ...हे आमा तिमरी माया लागे हो, रुनछ मूं खशछ आँशू छररर..र।'' राजेश नेपाली गाना गाता हुआ, हँसता मुस्कुराता बाहर चल दिया। उसके चेहरे पर एक चमक बिखरी हुई थी, जिसमें डर का कहीं नामो-निशान नहीं था। वही हँसमुख चेहरा, बर्फीली ऊँची पहाड़ियों जैसी शांत हँसी, पर देश के दुश्मनों के लिए पहाड़ों की सी कठोरता।

सुधा मन ही मन सोच रही थी धन्य हैं ये भारतीय सैनिक जो अपनी जान की परवाह ना करते हुए सिर्फ अपने देश के लिए जीते हैं। धन्य हैं इनके परिवार वाले जिनके यहाँ ऐसे बहादुर जन्म लेते हैं। सच में यह लोग अगर कठिन परिस्थितियों मे देश की रक्षा ही नहीं करेंगे ता हम भी इतने खुश और सुरक्षित कैसे रहेंगे?

राजेश आजकल सियाचिन में पोस्टेड है और छुट्टीयों में घर आया हुआ है। राजेश सुधा के भाई कार्तिक का बचपन का दोस्त है, जो नेपाली है और पास में ही रहता है। बहुत बचपन में ही अपनी माँ को खो चुका दो बहिनों का भाई राजेश, सुधा और कार्तिक के घर का एक अंग बन गया था।

सुधा की माँ में अपनी माँ को ढूँढ़ता, सुधा को दीदी मानता राजेश घर में सभी का बहुत प्यारा था। इस मातृहीन बालक का घर में सब बहुत ध्यान रखते और वह भी कार्तिक की तरह घर मे सब पर अधिकार दिखाता।

बचपन में जब वह सुधा के घर आता तो आते ही पूछता, ''कार्तिक घर में अकंल जी है क्या?''

''नहीं हैं! आ...जा।'' राजेश हँसता हुआ अंदर आ जाता।

''अरे कार्तिक तेरे पापा से बहुत डर लगता है। अभी होते तो पूछते दो दूनी चार, चार दूनी आठ, आठ दूनी....। साईकिल में कितने स्पोक होते हैं। अरे अंकल जी को इतने सारे सवाल कहाँ से आ जाते हैं?'' और सब ही-ही करके हँसने लगते। सुधा और कार्तिक के पिता रिटायर्ड फौजी थे जो हमेशा सामान्य ज्ञान के प्रश्न बच्चों से पूछते थे इसलिए सब उनसे डरते थे।

सुधा के घर के आसपास का माहौल फौजी लोगों से युद्ध, वीरता की कहानियाँ सुन-सुनकर उनका मन भी फौज में जाने के लिए करता। कार्तिक के दादाजी और पिताजी भी रिटायर्ड थे।

राजेश तो बचपन से ही सुधा की माँ से कहता, ''आँटीजी देखना मैं बड़ा होकर फौज में जाऊँगा और दुश्मनों को वो मजा चखाऊँगा कि वे भी याद करेंगे।'' वह अपनी छोटी सी मुट्ठी को तानता हुआ कहता।

''शाबास राजेश बहुत अच्छा सोचते हो।'' घर के सब लोग उसका उत्साह वर्द्धन करने लगते।

बचपन से फौज का ख्वाब देखते राजेश व कार्तिक बड़े हो गए इंटर करने के बाद दोनों फौज में जाने की तैयारी करने लगे। रोज सुबह-सुबह चार-पाँच मील दौड़ते, अंकुरित चने, मूँग खाते। केला खाते, दंड-बैठक लगाते, हँसते-खिलखिलाते राजेश और कार्तिक, जहाँ भर्ती होती वहाँ जाकर परीक्षा देकर आते राजेश और कार्तिक।

एक दिन सुधा छत पर से सूखे हुए कपड़े उतार

रही थी की उसे राजेश की आवाज सुनायी दी। ''दीदी-दीदी कहाँ हो आप? जल्दी आओ।''

''अरे आ रही हूँ। ऐसी क्या बात है क्यों उद्धम मचा रखा है? क्यों बंदर की तरह उछल रहा है।'' सुधा छत से चिल्लायी।

''अरे जल्दी आओ दीदी।''

सुधा जल्दी-जल्दी नीचे आयी। राजेश ने झट से हाथ में पकड़े हुए डिब्बे से लड्डू निकालकर कर सुधा के मुँह में डाल दिया।

''दीदी मैं फौजी बन गया।'' राजेश ने फौजी सैल्यूट देते हूए सुधा से कहा। उसकी आँखों मे खुशी के आँसू थे आज। फौज में जाने का उसका बचपन से देखा आ रहा ख्वाब पूरा हो रहा था।

''भगवान तुझे हमेशा खुश रखे। तेरे मन की सब मुरादे पूरी हों।'' सुधा आशीर्वाद देते हुए कह रही थी। खुशी से उसकी आँखें भी भर आई थीं।

राजेश का फौज से नियुक्तिपत्र आया था। एक साल की उसकी ट्रेनिंग थी और वह फौजी बन जाएगा। कार्तिक के हाथ में फ्रेक्चर होने के कारण फौज में नहीं जा पाया। वह भी बाद में सरकारी शिक्षक हो गया। सुधा की भी शादी हो गयी। सब अपनी-अपनी जिम्मेदारियों में व्यस्त हो गये। आज तीन साल बाद सुधा मायके में राजेश से मिल रही थी। राजेश आजकल छुट्टियों में घर आया हुआ था। बड़े दिनों बाद आज सब लोग पहले की तरह हँस रहे थे।

इसी तरह आठ-दस साल बीत गए। सुधा भी घर-गृहस्थी में उलझी अब मायके कहाँ आ पाती थी? कार्तिक से फोन पर ही राजेश के हाल पूछ लेती थी। कार्तिक और राजेश की भी शादियाँ हो चुकी थीं। सब अपनी-अपनी गृहस्थियों में मग्न थे। राजेश, उसकी पत्नी लता, छः साल के बेटे हनी और तीन साल की बेटी गुड़िया के साथ बहुत खुश था। तभी एक दिन सुबह-सुबह कार्तिक का फोन आया।

''दीदी राजेश नहीं रहा।'' कार्तिक रोते हुए फोन पर कह रहा था।

''क्या...ऽ....ऽ....? क्या.....क्या कर रहे हो कार्तिक??? यह सब कैसे हुआ?'' रोते हुए सुधा ने पूछा।

''दीदी...।'' कार्तिक का गला रुंधने लगा था, उससे आगे कुछ ना कहा गया उसने फोन रख दिया। सुधा के हाथ से फोन गिर गया। वह धम्म से पास में रखे सोफे पर गिर पड़ी। उसे कुछ भी समझ नहीं आ रहा था, बस वह रोए जा रही थी। बहुत देर तक रो लेने के बाद उसने घर में सबको अपने रोने का कारण बताया। किसी तरह बैग में कपड़े ठूँस कर वह मायके जाने के लिए कार से निकल पड़ी।

मायके जा कर सुधा ने रोते हुए माँ के गले लगते हुए पूछा, ''क्या हुआ था राजेश को वह कैसे मरा.....?''

''आ अन्दर आ।'' माँ भी बुरी तरह से रो रही थी।

''क्या हुआ राजेश को?'' सुधा ने फिर पूछा।

''राजेश की दुबारा सियाचिन में पोस्टिग हुयी थी। अब उसका ट्रांसफर (स्थानान्तरण) गुजरात हो रहा था। उसने सोचा कि चलो बच्चों से भी मिल लेता हूँ। दिल्ली तक तो वह हवाई जहाज से आया था। वहाँ से उसने सोचा कि जल्दी घर पहुँच जाऊँगा इसलिए हरिद्वार के लिए प्राइवेट टैक्सी बुक करा ली। काफी सामान खरीद लिया था उसने अपनी पत्नी और बच्चों के लिए।

चार दिन पहले ही तो लता कितनी खुश थी, माँ को बता रही थी, ''आँटी जी राजेश की पोस्टिंग गुजरात में हो गयी है। मैं तो बहुत खुश हूँ। सियाचिन में जब तक ये थे, मैं बहुत डरती थी, पर गुजरात तो अच्छी जगह है। इनको क्वार्टर मिलते ही हम भी जायेंगे घूमने। आज ही इनका फोन आया है दो दिन

के लिए ये घर आ रहे हैं।'' सुधा की माँ ने रोते हुए बताया।

''फिर.....? सुधा ने पूछा।

''टैक्सी वाले ने ही मार दिया राजेश को। बहुत सामान था राजेश के पास। सुना है उसके ए.टी.एम. से दो लाख रुपये भी निकाल लिए हैं। उसकी घड़ी, चैन सब गायब थे।'' सुधा की माँ ने कहा।

''फिर...? पता कैसे चला?'' सुधा ने पूछा।

''दिल्ली से उसने टैक्सी बुक की थी। फोन से उसने लता को बताया, कि वह आ रहा है टैक्सी से, उसके और बच्चों व उसके लिए ढेर सारा सामान भी है, लेकिन पूरा दिन और रात बीत जाने के बाद भी राजेश जब नहीं आया तो लता को चिन्ता हुई। उसने मोबाइल से फोन किया तो राजेश का मोबाइल स्विच ऑफ था।

यहाँ पुलिस चौकी में रपट दर्ज करायी, राजेश के रिश्तेदारों को भी सूचित किया गया। तीन दिन बाद राजेश का शव दिल्ली के एक मुर्दाघर में लावारिस लाश के रूप में मिला, राजेश के एक रिश्तेदार को।

''हाय राम.....गरीब को कितनी बुरी मौत मारा गया।'' सुधा का दिल जार-जार रो रहा था।

बहुत देर तक सुधा व उसकी माँ बुत बनी बैठी रहीं। किसने सोचा था इतना प्यारा राजेश यूँ छोड़ के चला जाएगा। किसी तरह अपने कदमों को घसीटती हुयी सुधा राजेश के घर तो पहुँच गयी पर वहाँ का दृश्य देखकर उसका दिल घबरा गया। राजेश की खूबसूरत पत्नी अभी जो महज सत्ताईस-अट्ठाईस साल की ही थी, बेहोश पड़ी थी। पास में ही बैठे उसके बच्चे माँ को बेहोश देखकर जोर-जोर से रो रहे थे। राजेश की बड़ी बहन किसी तरह अपनी रुलाई रोकती लता के मुँह पर पानी के छीटे मारकर उसे होश में लाने की कोशिश कर रही थी। आस-पड़ोस की औरतें उसकी कलाईयों से चूड़ियाँ तोड़ रही थीं। सारी औरतें रो रही थी। माहौल बहुत ही कारुणिक था। सुधा से यह दृश्य देखा नहीं जा रहा था, ''हे भगवान किसी दुश्मन को भी यह दिन मत दिखाना। हे भगवान तू तो पत्थर का हो गया। तुझे अच्छे इंसानों पर दया नहीं आती? क्यों तूने ऐसा किया?? क्या बिगाड़ा था हमारे राजेश ने तेरा....उसके बच्चों को तूने किस बात की सजा दी?

सुधा का दिल बहुत घबरा रहा था। वह जल्दी ही घर लौट आई। उसके कानों में बार बार राजेश के शब्द गूंज रहे थे, ''दीदी मेरा बस चले तो मैं आज ही दुश्मन को सबक सिखा दूँ।.....मेरे खून का एक-एक कतरा देश के लिए है....। मैं जियूं भी तो देश के लिए....मरूँ भी तो देश के लिए।''

वह सोच रही थी, केवल कुछ पैसों के खातिर उन्होंने भारत के एक जांबाज सैनिक को मार दिया। कितनी बड़ी क्षति देश को पहुँचाई? पर इन भेड़ की खाल में छिपे भेड़ियों को इससे क्या असर हुआ। वह सोच रही थी, आज देश को दूसरे देश के दुश्मनों से ज्यादा खतरा देश के अंदर बसने वाले दुश्मनों से है जो चंद पैसों, स्वार्थों की खातिर देश को बेचने से भी नहीं हिचकते। आखिर इनका अंत तू क्यों नहीं करता भगवान?

इन्हें तू क्यों नहीं मारता? क्यों मेरे राजेश जैसे बहादुर भाई को तूने मारा? तब तू कहाँ था? पर भगवान क्या कहता चुप था। रातभर सुधा को नींद नहीं आयी। बार-बार राजेश का चेहरा उसकी आँखों में घूम रहा था।

दूसरे दिन सेना की खुली गाड़ी से राजेश का शव लाया गया। उसकी बटालियन के अधिकारी व साथी उसको लेकर आए थे। अजीब रोना पीटना मचा हुआ था।

सुधा ने रोते-रोते किसी तरह राजेश का शव लेकर आए हुए अधिकारी से पूछा, ''सर कुछ पता

चला। राजेश के हत्यारों का?''

''दीदी राजेश को जिन टैक्सी वालों ने मारा, वे पकड़े गये हैं। हमारा राजेश बहादुरों की मौत मरा है। जाते-जाते भी देश में बसने वाले देश के दुश्मनों को पकड़वा के मरा है। हमें अपने जवान पर गर्व है।'' एक अधिकारी ने उत्तर दिया।

''कैसे?''सुधा का रोना थम गया। उसने विस्मित होते हुए पूछा।

''टैक्सी वाले ने राजेश के पास इतना सामान, कीमती मोबाइल, गले में सोने की चैन, घड़ी वगैरह देखी तो उसका मन डोल गया, लेकिन लंबे-चौड़े फौजी राजेश पर वह अकेले काबू नहीं पा सकता था इसलिए उसने दिल्ली से बाहर सुनसान रास्ते में अपने चार साथियों को बुला लिया था। राजेश की उनसे हाथापाई हुई तो एक टैक्सी वाले की जेब राजेश के हाथ में आ गयी और उसी कपड़े के साथ उसमें रखी बैंक की पर्ची भी राजेश की मुठ्ठी में आ गयी।

राजेश को उन्होंने वहीं मार दिया। राजेश बहादुरी से लड़ा पर राजेश अकेला था और वे पाँच। जल्दी बाजी में भागते हुए टैक्सी वाले ने अपनी जेब नहीं देखी। राजेश के शव का पंचनामा करते समय जब पुलिसवालों ने राजेश की मुठ्ठी में पर्ची देखी तो वे आसानी से टैक्सी वालों तक पहुँच गए और फिर जब पुलिस का डंडा बजा तो उन्होंने सब उगल दिया। अब पाँचों जेल में चक्की पीस रहे हैं।''

सुधा के कान में राजेश के शब्द गूँजे, ''दीदी मैं एक दिन दुश्मनों को वो सबक सिखाऊँगा कि वे भी याद रखेंगे। मैं जियूं भी तो देश के लिए मरूँ भी तो देश के लिए।'' सुधा आँखों से आँसू पोंछने लगी।

श्मशान घाट लोगों से खचाखच भरा हुआ था। सुधा भी अपने भाई कार्तिक के साथ पहली बार श्मशान घाट गयी थी। सेना की गाड़ी से राजेश का शव चंदन की लकड़ियों से सजायी गयी चिता पर रखा गया। साथ में आए जवानों ने इक्कीस तोपों की सलामी राजेश को दी उसको अंतिम यात्रा की विदाई में। उसकी चिता पर पुष्प चक्र उसके अधिकारी द्वारा चढ़ाया गया। सबने उसे सैल्यूट दिया। एक बहादुर को अंतिम विदाई....सम्मान के साथ एक बहादुर जांबाज सिपाही को विदाई। राजेश के चाचा ने उसके पुत्र के हाथों अग्नि दिलवाई। चिता में शोले भड़के राजेश सबसे विदा ले रहा था। सबकी आँखों में आँसू थे। सब रो रहे थे। आसमान भी हल्की-हल्की बूंदे बरसा रहा था। भगवान भी रो रहा था। सुधा अपनी आँखे पोंछ रही थी, तभी उसके कानों में आवाज आई,

''दीदी मैं मरा नही हूँ मैं लौट के आऊँगा। मेरे खून का एक-एक कतरा, मेरी राख का हर कण एक नया राजेश बनेगा। यह धरती मेरी राख के हर कण से हजार राजेश पैदा करेगी, जो खत्म कर देंगे देश के उन गद्दारों को जो देश को बेचते हैं। चंद स्वार्थी पैसों के कारण हमारे देश का नुकसान करते हैं। देख लेना दीदी! आखिर कब तक जिएँगे ये..? खात्मा कर देंगे हजारों देशभक्त राजेश इनका। मैं लौट के आऊँगा फिर से भारत के इन बच्चों में--देश भक्त बच्चों में। जो देश का सिपाही बन कर हमारे देश की रक्षा करेंगें। दुश्मनों से लड़ेंगे।'' सुधा ने इधर-उधर देखा, उसे कोई नजर नहीं आया पर उसे लगा जैसे राजेश अभी यहीं था।

उसने सामने देखा, राजेश की चिता जल रही थी। शोले उठ रहे थे, और धुँए की एक रेखा आसमान की ओर उठ रही थी जो आसमान में जाकर विलीन हो रही थी। जो राजेश को अनंत की ओर लेकर जा रही थी। आत्मा से परमात्मा का मिलन....कुछ देर विश्राम और फिर वापस धरती पर लौट के आने के लिए। सुधा का हाथ राजेश को सैल्यूट कर रहा था।

ग्रीनवुड स्कूल, शक्तिफार्म,
सितारगंज (ऊधमसिंह नगर)

रुद्रनाथ : एक अद्भुत, साहसिक यात्रा

डॉ उमेश प्रताप वत्स

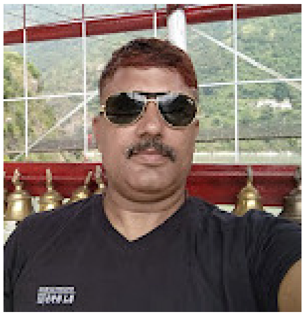

आइए! आज मैं आपको हिमालय शिखर की लगभग 60 किलोमीटर की पदयात्रा पर ले चलता हूँ जो कि पाँच या छः दिनों में पूरी होती है। ट्रैकिंग का शौक रखने वालों के लिए यह बहुत ही अद्भुत, आकर्षक एवं साहसिक यात्रा है जो बाद में बहुत ही आन्नद के साथ समाप्त होती है। आपको इस ट्रैकिंग में प्रकृति की सुंदरता, साहस, आकर्षण एवं दुर्गम जंगल के भय और आनन्द देने वाले मिले-जुले अनुभव देखने को मिलेंगे।

आप बस अथवा निजी गाड़ी से रात्रि में हरिद्वार या ऋषिकेश आकर किसी होटल या धर्मशाला में विश्राम करो। सुबह शीघ्र ही इस साहसिक यात्रा के रूप में रुद्रनाथ की ट्रैकिंग के लिए निकलने की योजना बनानी चाहिए। ट्रैकिंग के लिए आवश्यक तैयारी कर चमोली के लिए अपने निजी वाहन से कूच करना बेहतर है क्योंकि आप कहीं भी रुककर प्राकृतिक दृश्यों का आन्नद उठा सकते हैं। पहाड़ी सड़कों से गंगा मैया एवं पर्वत शृंखलाओं के दर्शन करना बहुत ही रोमांचक अनुभव है। लगभग सांय छः बजे तक चमोली पहुँचा जा सकता है। चमोली से आवश्यक वस्तुएँ खरीद लेनी चाहिए क्योंकि इसके बाद चीज़ें जुटाने का अवसर मिलना बहुत मुश्किल है। चमोली से पीपल कोटि का रास्ता दो घंटे का है। अर्थात् रात्रि आठ बजे तक पीपल कोटि पहुँचकर वहीं होटल में विश्राम करना चाहिए। सुबह स्नान-नाश्ते आदि से निपटकर आवश्यक सामान जैसे बरसाती, टॉर्च, दवाइयाँ, हल्के सूती कपड़े, स्वेटर आदि ट्रैकिंग बैग में लगाकर यहाँ अपना निजी वाहन छोड़कर हेलंग जाने हेतु बस लेनी चाहिए क्योंकि पीपल कोटि से आगे निजी वाहन में जाने का परिणाम घातक हो सकता है। हेलंग के लिए जोशीमठ वाली बस मिलती है जो कि जोशीमठ से दस किलोमीटर पहले पड़ता है। हेलंग में रमणीय पर्वतों की सुन्दरता देखते ही बनती

है। यहाँ आपको अनुभव होगा कि आप मैदानी क्षेत्र से सपनो की दुनिया में बढ़ रहे हो। हेलंग से ल्यारी थैना के लिए टैक्सी बुक करानी पड़ती है क्योंकि आगे पहाड़ों की तंग पगडंडियों पर बस आदि बड़ी मोटर गाड़ी नहीं चल पाती। ल्यारी थैना तक टैक्सी ऊबड़-खाबड़ रास्तों पर बच्चों के खेल की तरह दौड़ती हुई आपका मन मोह लेगी। जहाँ एक ओर ऊँचे पहाडों के शिखर होंगे तो दूसरी ओर हजारों फुट गहरी खाई। ल्यारी थैना में मोटर गाड़ी का मार्ग समाप्त हो जाता है और आगे पैदल ही असंख्य पर्वत पार कर 15000 फुट ऊँचे शिखरों को कदमों से मापना होता है अर्थात् यहाँ से आपकी ट्रैकिंग प्रारंभ होती है।

ल्यारीथैना से बडगिण्डा गाँव की दो किलोमीटर की ट्रैकिंग साँप की तरह लहराती पगडंडियों पर चढ़ते हुए शुरु होती है। यहाँ बडगिण्डा में उत्तराखण्ड के पाँच बद्री में से एक ''ध्यान बद्री नारायण'' के पावन दर्शन करने का सौभाग्य प्राप्त होता है। डेढ़

किलोमीटर दूर कल्पगंगा को पार कर विशाल झरने के मनमोहक श्य को देखते हुए अत्यंत प्राचीन पवित्र कल्पेश्वर महादेव का स्थान आता है। यहाँ भगवान शंकर की जटाओं के दर्शन होते हैं जो कि महाभारत की कथा से जुड़ा बताया जाता है। यहाँ से अगला पडाव गाँव बांसा की ओर है। दो किलोमीटर की सीधी चढ़ाई गाँव बांसा तक लेकर जाती है। यहाँ आप निवेदन कर ऊर्वाश्रम में रुक सकते हैं। आश्रम के नाम पर एक मंदिर का शैड है जिसमें शिवलिंग स्थापित है और एक महात्मा जी की कुटिया जहाँ साथ निर्मल गंगाजल का बहता गदरा (पहाड़ी नाला) सुशोभित हो रहा है। यहाँ आपको दो-तीन यात्रियों को ठहरने के लिए छत तो मिल सकती है किंतु कपड़े व खाने की सामग्री आपकी अपनी होनी चाहिए। यदि संख्या तीन से ज्यादा हैं तो अपना टैंट लगाना पड़ेगा। ल्यारी थैना से यहाँ तक आठ किलोमीटर की ट्रैकिंग आपको सुविधाओं के अभाव में भी नींद के आगोश में ले जाएगी। यहाँ आपको चारों ओर अखरोट के जंगल मिलेंगे। सुबह जल्दी उठकर अखरोट के वृक्ष की दातुन आपको तरोताजा कर देगी। यहाँ से अगला पड़ाव है दुमुक गाँव। दो पहाड़ पार करके लगभग तेरह किलोमीटर में सात किलोमीटर की खड़ी चढ़ाई चढ़नी होगी। ध्यान रखने की बात यह है कि पिट्ठू बैग अधिक भारी नहीं होना चाहिए तथा हाथ में स्टिक व पानी की बोतल साथ में अवश्य रखें। यहाँ पहाड़ों में यदा-कदा बारिश होती रहती है अत: आपको बारिश में ही अखरोट के जंगल की तीन किलोमीटर की चढ़ाई पूरी करनी होगी। यहाँ बीच-बीच में शीतल जलधारा मिलती रहेंगी जहाँ आप पहाड़ों का औषधियुक्त जल पीकर अपनी थकान उतार सकते हो। यहाँ से कलगोट के लिए दो किलोमीटर की कठिन चढ़ाई के बाद तीन किलोमीटर की सीधी ऊतराई है जो कि बारिश की फिसलन में थोड़ा मुश्किल हो जाती है। कलगोट गाँव में आपको ठहरने के लिए स्थान मिल जायेगा। यहाँ ग्रामवासी अपने घरों में ही यात्रियों के लिए एक-दो कमरा तैयार रखते हैं जो कि भोजन सहित बहुत ही उचित मूल्य पर उपलब्ध हो जाते हैं। यहाँ आपको पहाड़ी खाना ही मिलेगा जिसका अपना अलग ही महत्व है। कलगोट में ही नंदा देवी के

प्राचीन मंदिर में दर्शन करने का सौभाग्य मिल जाता है जो कि यहाँ कि संस्कृति, सभ्यता व अध्यात्म के दर्शन कराता है। यहाँ रुकने के बाद आपको पाँच किलोमीटर दूर दुर्मुख गाँव के लिए कमर कसनी होगी। इस जंगली रास्ते में आपका सामना बिच्छू बूटी और पहाड़ी जोक से होगा। यह बूटी जहाँ छू जाये तो पीड़ित बुरी तरह बस खुजाता ही रह जाता है और जहाँ-जहाँ हाथ लगाता है खुजली की समस्या बस फैलती ही जाती है। किन्तु अच्छी बात यह है कि जहाँ बिच्छू बूटी होती है वहीं पहाड़ी पालक भी होता है। पालक का पत्ता रगड़ने से खुजली दस सैकिंड में समाप्त हो जाती है। चलते हुए सावधानी ही बिच्छु बूटी से बचाती है। साढ़े तीन घंटे की निरंतर ट्रैकिंग आपको पहाड़ों की तलहटी में बसे दुर्मुख गाँव तक ले जाती है।

यहाँ भी गाँव में रहने के लिए एक-दो लॉज बने हुए हैं। इन्हीं गाँवों में गाइड के रूप में लड़के भी मिल जाते हैं। रात्रिभोज और ठंड से बचने के लिए

रजाई में घुसकर दिन-भर की खट्टी-मिठ्ठी यादों व अगले पड़ाव की योजना के साथ आप कब निद्रा में चले जाओगे, आपको थकान के कारण पता भी नहीं चलेगा। यहाँ से अगला पड़ाव और भी अधिक रोमांचक होगा क्योंकि पहाड़ों में बुग्याल की सुंदरता का अपना ही महत्व है। आपको बारह किलोमीटर दूर 'पनार बुग्याल' की ट्रैकिंग के लिए तैयार रहना होगा।

बुग्याल कई पर्वत शिखरों के मध्य एक विस्तृत भाग में सुन्दर घास, फूल एवं प्राकृतिक सौंदर्य को समेटे फैला पड़ा होता है। इस बुग्याल को देखने के लिए अधिकतर यात्री गोपेश्वर से आने वाले मंडल और सगर के रास्ते आते हैं क्योंकि इन दोनों रास्तों से यह लगभग सोलह-सत्रह किलोमीटर पड़ता है। जबकि हेलंग के रास्ते से लगभग पैंतीस किलोमीटर पड़ता है।

आगे दो किलोमीटर की चढ़ाई के बाद जब नीचे उतरोगे तो गंगा मैया में मिलने वाले गदरे के किनारे-किनारे चलते हुए चार किलोमीटर की थकावट कब छूमंतर हो जायेगी पता भी नहीं चलेगा। फिर लगातार तीन किलोमीटर तक भयंकर जंगल के बीच खड़ी चढ़ाई मिलेगी।

जंगल की चढ़ाई के बाद एक छोटा सा बुग्याल आयेगा जहाँ आप कुछ विश्राम कर सकते हो। फिर यहाँ से नैना घाट को होते हुए 'तोली बुग्याल' पहुँच जाओगे। जो कि 'तोली ताल' के नाम से भी जाना जाता है। तोली बुग्याल तक आठ किलोमीटर की दुर्गम ट्रैकिंग की थकान बुग्याल के अपार सौंदर्य को निहारते ही गायब हो जाती है। इस बुग्याल पर इतना सुख मिलता है कि आगे जाने को मन ही नहीं करता। जंगलों के बीच बारिश के कारण पगडंडियों पर भूल-भूल्लियाँ का माहौल हो जाता है और यहाँ नेटवर्क भी न के बराबर ही चलता है अतः घर से ही गूगलमैप रूट डाउनलोड करके लाना चाहिए। दो किलोमीटर की सीधी चढ़ाई के बाद पनार बुग्याल की आभा आपके समक्ष हेगी। यहाँ आप पिछला सब भूल जाओगे, आप पनार बुग्याल की सुंदरता देखकर जोर-जोर से चिल्लाने लगोगे। यहाँ यात्री मारे खुशी के किलकारियाँ मारने और जोर-जोर से चिल्लाने लगते हैं। उनकी आवाज पर्वत-घाटियों से टकराकर वापिस उन्हीं को सुनाई देती है जो रोमांच को ओर बढ़ा देती है। शायद इस खुशी में कहीं न कहीं मंजिल तक सफलता पूर्वक पहुँचने का संतोष भी छुपा होता है। पर्वतों के शिखर पर होने के कारण यहाँ ठंड से कंपकपी होने लगती है। यहाँ कुछ बक्करवाल झोपड़ीनुमा दुकानों में गर्म-गर्म कॉफी व मैगी का प्रबंध रखते हैं जो ठंड दूर करने के लिए बहुत बढ़िया रहता है। यहाँ ठहरने के लिए भी यही बक्करवाल अपनी दुकानों के साथ ही बड़ी झोपड़ी में औसत मूल्य में रजाई-गद्दों की व्यवस्था करते हैं।

अगला पड़ाव पाँच किलोमीटर दूर पंचगंगा में होता है। पनार से पंचगंगा तक पाँच किलोमीटर का रास्ता बिना अधिक चढ़ाई-उतराई के सुखद सा है। चारों ओर सुन्दर नजारे देखने को मिलते हैं। यहाँ आपको लगता है कि आप पर्वत की रीढ़ पर चल रहे हैं। आपके दोनों ओर हजारों फीट गहरी खाई दिखाई देगी। पंचगंगा अर्थात् अलग-अलग पर्वतीय शिखरों से जल की पाँच धाराएँ एक साथ होकर बहती हैं। यहाँ से मात्र तीन किलोमीटर दूर स्थित रुद्रनाथ जी का ध्यान करते ही यात्री रोमांच से भर जाते हैं। पनार से पंचगंगा होते हुए रुद्रनाथ तक जाने वाले रास्ते पहले की अपेक्षा अधिक सुगम, सुखद और रोमांच से भरे हुए मिलते हैं। आप लगभग डेढ़ घंटे में साढ़े तीन किलोमीटर की ट्रैकिंग के बाद रुद्रनाथ महादेव के पवित्र सिद्ध स्थान पहुँच जाते हो। यहाँ से 'चौ-खंभा' की बर्फ से ढकी दूध सी पिल्लरनुमा चारों चट्टानें यात्रियों को अपनी ओर आकर्षित करती है। मंदिर के अन्दर जाते ही इतना मन लगता है कि वापिस आने का मन ही नहीं करता।

रुद्रनाथ से वापसी के लिए यदि रूट बदलकर

गोपेश्वर महादेव की ओर से उतराई की जाए तो आपको ओर बहुत सारी प्राकृतिक सुंदरता देखने का अवसर मिल जाता है। गोपेश्वर की ओर रास्ता छोटा भी है और सुखद भी। सबसे पहले डेढ़ किलोमीटर की चढ़ाई व तीन किलोमीटर की उतराई

के बाद हंस बुग्याल आता है। इसके बाद लगभग छः किलोमीटर की लगातार उतराई के बाद कांठी बुग्याल आता है। जहाँ यात्री रुद्रनाथ से लगभग नौ घंटे की ट्रैकिंग कर शाम तक पहुँच पाते हैं। यहाँ ध्यान रखने वाली बात यह है कि शाम छः बजे से पहले-पहले जंगल से बाहर निकलना बहुत जरूरी है क्योंकि शाम को जंगली सुअरों व बघेरों का खतरा बढ़ जाता है। तीन किलोमीटर लगातार उतराई के बाद एक गधेरा आता है। गधेरा पार करने के बाद आपके सामने जो दृश्य होगा उसका अभूतपूर्व सौंदर्य देखकर आपको लगेगा कि जैसे इन्द्रलोक में विचरण कर रहे हों। एक ओर विशालकाय ऊँचे पर्वत है तो दूसरी ओर पर्वतों के बीच लगभग 200 फुट ऊँचे से जल प्रपात गिर रहा है जो लगभग 25-30 फुट चौड़ा होगा। इस झरने के साथ वह गुफा है जहाँ महर्षि अत्रि तपस्या किया करते थे। परन्तु वहाँ तक जाना बहुत दुष्कर कार्य है। पहले तो एक चट्टान पर लोहे की संकल (चेन) जो पहले से ही यहाँ बंधी हुई है, पकड़कर चट्टान पर चढ़ना होगा, फिर दो चट्टानों के मध्य बहुत ही संकरे मार्ग से साँप की तरह रेंगकर गुफा तक जाना होगा। थोड़ी सी असावधानी नीचे 150 फुट गहरी खाई में पँहुचा सकती है और ढलान भी खाई की ओर ही है। अधिकतर यात्री नीचे से ही झरने का आन्नद लेते हैं। यहाँ से दो किलोमीटर दूर माता अनुसूया का मंदिर है, यह मंदिर एक व्यवस्थित गाँव के बीच में है। यहाँ यात्री पुत्र होने की मनोकामना के लिए आते हैं और पूर्ण होने पर माथा टेकने परिवार सहित पहुँचते हैं।

यहाँ से ट्रैकिंग का अगला और अंतिम लक्ष्य चमोली जिले का गाँव मंडल है। गंगा के गधेरे के साथ-साथ बना रास्ता अत्यंत ही मोहक है। साठ किलोमीटर की ट्रैकिंग यहाँ मंडल में पूरी होती है। यहाँ से गोपेश्वर के लिए टैक्सी मिल जाती है। जहाँ से आप बस के द्वारा पीपल कोटी पहुँच जाते हैं जहाँ आपका निजी वाहन आपकी

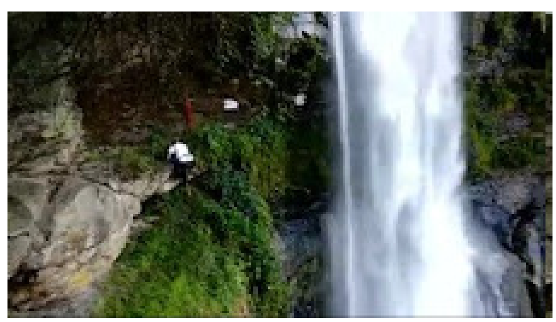

प्रतीक्षा कर रहा होता है।

umeshpvats@gmail-com
14, शिवदयाल पुरी, निकट आइटीआई
यमुनानगर, हरियाणा - 135001
मो. 9416966424

समकालीन हिंदी उपन्यासों में अभिव्यक्त किन्नर संघर्ष

रामेश्वर महादेव वाढेकर

समकालीन साहित्य का अध्ययन करने के पश्चात समझ आता है कि स्त्री विमर्श, दलित विमर्श, आदिवासी विमर्श, मुस्लिम विमर्श, अल्पसंख्याक विमर्श, वृद्ध विमर्श, किन्नर विमर्श आदि पर गंभीर चर्चा हुई है। वर्तमान समाज में किन्नर को हिजड़ा, खुसरो, अली, छक्का आदि नाम से पुकारा या पहचाना जाता है। किन्नर के चार प्रकार है बचुरा, नीलिमा, मनसा, हंसा। बचुरा वर्ग के किन्नर वास्तविक हिजड़े होते हैं। वे जन्म से न स्त्री होते हैं ना पुरुष। नीलिमा वर्ग में वे हिजड़े आते हैं, जो किसी परिस्थिति वश या कारणवश स्वयं हिजड़े बन जाते हैं। मनसा वर्ग में वे हिजड़े आते हैं, जो मानसिक तौर पर स्वयं को हिजड़ा समझने लगते है। हंसा वर्ग में वे हिजड़े आते हैं, जो किसी यौन अक्षमता की वजह से स्वयं को हिजड़ा समझने लगते हैं। किन्नर समाज विश्व के हर क्षेत्र में समाहित है। वे मनुष्य ही हैं, सिर्फ़ उनमें प्रजनन क्षमता न होने से समाज हीन नजर से देखता है। हिंदी साहित्य में शुरुआती दौर में पाण्डेय बेचन शर्मा, सूर्यकांत त्रिपाठी, शिवप्रसाद सिंह, वृंदावन लाल वर्मा आदि ने किन्नर समाज की समस्या पर लिखा। किंतु समस्या का हल वर्तमान में भी नहीं।

हिंदी साहित्य में किन्नर समाज की समस्या पर अनेक उपन्यास लिखे गए और वर्तमान में भी लिखे जा रहे हैं। प्रमुख उपन्यास में 'यमदीप'- नीरजा माधव, 'मैं भी औरत हूँ'- अनुसुइया त्यागी, 'किन्नर कथा', 'मैं पायल...' महेंद्र भीष्म, 'तीसरी ताली', प्रदीप सौरभ, 'गुलाम मंडी', निर्मल भुराड़िया, 'प्रतिसंसार', मनोज रूपड़ा, 'पोस्ट बॉक्स नं. 203 नाला सोपारा'-चित्रा मुद्गल आदि। उपरोक्त उपन्यासों का अध्ययन करने के पश्चात किन्नर समाज की त्रासदी, उनका संघर्ष समझ में आता है। किन्नर समाज की प्रमुख समस्या में शैक्षिक समस्या, बहिष्कृत समस्या, पारिवारिक समस्या, विस्थापन समस्या, आवास समस्या, रोजगार समस्या, देहव्यापार समस्या, वेश्या समस्या, यौन हिंसा समस्या आदि हैं। इन समस्याओं के साथ किन्नर समाज वर्तमान में भी संघर्ष कर रहा है। वर्तमान में किन्नर समाज के संदर्भ में कानून है किंतु अस्तित्व में कुछ नहीं। वे आज भी खुद की पहचान समाज में निर्माण नहीं कर सके। समाज ने मानसिकता बदलने की नितांत जरूरत है, तभी किन्नर समाज सम्मान के साथ जी सकता है। समकालीन उपन्यासों में किन्नर समाज की विभिन्न कठिनाइयों एवं उनके संघर्ष को संवेदनात्मक स्तर पर प्रमुखता से उठाया गया है। इन्हीं संवेदनाओं एवं संघर्ष को सहजने की कोशिश हम करेंगे।

शैक्षिक संघर्ष

किन्नर की ज़िंदगी में जन्म से संघर्ष शुरू, मृत्यु तक जारी। माँ-बाप खुद के बेटे को स्वीकार करने की मानसिकता में नहीं होते। ऐसा क्यों हो रहा है? यह वर्तमान में चिंतन का विषय है। बचपन में शारीरिक बदलाव होने के कारण अनेक परिवारों के सदस्य बच्चे को अस्पताल लेकर जाते हैं। बच्चा किन्नर है, पता चलने के पश्चात स्वीकारने की स्थिति में कोई नहीं रहता। उसे किन्नर बस्ती में छोड़ा जाता है या जान से मारने की कोशिश की जाती है। किन्नर बस्ती में वह बड़ा तो होता है, किंतु शिक्षा से वंचित। उसने पढ़ाई करने को ठान भी लिया तो समाज व्यवस्था पढ़ने नहीं देती। यह

वर्तमान की वास्तविक स्थिति है। पढ़ाई न होने से कहीं समस्या का शिकार वह बनता जा रहा है। किन्नर समाज के शैक्षिक संघर्ष के संदर्भ में नीरजा माधव 'यमदीप' उपन्यास में कहती है, ''माता किसी स्कूल में आज तक किसी हिजड़े को पढ़ते, लिखते देखा है? किसी कुर्सी पर हिजड़ा बैठा है? मास्टरी में, पुलिस में, कलेक्ट्री में, किसी में भी, अरे! इसकी दुनिया यही है। माताजी कोई आगे नहीं आएगा कि हिजड़ों को पढ़ाओ, लिखाओ, नौकरी दो। जैसे कुछ जातियों के लिए सरकार कर रही हैं।''[1]

'नंदरानी' के माध्यम से नीरजा माधव ने किन्नर समाज का शैक्षिक संघर्ष बयां किया है। आज भी अनेक माताएँ किन्नर संतान होने के बावजूद पढ़ाना चाहती हैं, किन्तु पुरुष सत्ता के सामने कुछ नहीं कर पातीं। वर्तमान में कई 'नंदरानी' शिक्षा के लिए संघर्ष कर रही हैं। तकरीबन 2014 तक किन्नर समाज का लिंग ही निश्चित नहीं था, शिक्षा तो बहुत दूर। कोई सरकार उनकी तरफ ध्यान नहीं देती। जिस तरह स्त्री-पुरुष सभी को पढ़ने का संवैधानिक अधिकार है, उसी प्रकार किन्नर को वर्तमान में कानून है, सिर्फ अस्तित्व में नहीं। कुछ गिने-चुने किन्नर संघर्ष करके पढ़े हैं, किन्तु उन्हें अच्छे पद पर नियुक्ति नहीं मिलती। उनके साथ भेदभाव किया जाता है। जब तक समाज की सोच बदलेगी नहीं, तब तक किन्नर समाज का संघर्षमय जीवन जारी रहेगा, समान कानून होकर भी।

बहिष्कृत प्रथा के विरुद्ध संघर्ष

प्राचीन काल में किन्नर समाज को हीन वागणूक दी जाती थी, वर्तमान में उससे बुरी परिस्थिति है। किन्नर को खुद का परिवार नहीं स्वीकारता (समाज तो बहुत दूर की बात है। संविधान में सभी लोगों की तरह किन्नर समाज के भी मूलभूत अधिकार हैं। किंतु किन्नर समाज के मूलभूत अधिकारों का हनन होता है। उन्होंने न्याय मांगने की कोशिश भी की तो न्याय नहीं मिलता, अन्याय निरंतर होता है। वर्तमान में भी समाज उन्हें बहिष्कृत कर रहा है। इज्जत से जीने नहीं देता। वे जीकर भी मरे हुए हैं। चित्रा मुद्गल 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा' उपन्यास में बहिष्कृत प्रथा के संघर्ष संदर्भ में कहती हैं, ''कभी-कभी मैं अजीब सी अंधेरी बंद चमगादड़ों से अटी सुरंग में स्वयं को घुटता हुआ पाता हूँ। बाहर निकलने को छटपटाता। मैं मनुष्य तो हूँ न? कुछ कमी है मुझमें, इसकी इतनी बड़ी सज़ा।''[2] 'विनोद' के माध्यम से बहिष्कृत संघर्ष चित्रा मुद्गल ने साझा करने की कोशिश की है। वर्तमान में किन्नर समाज त्रासदी में जी रहा है, सामाजिक मानसिकता की वजह से। वह किन्नर है उसका दोष नहीं, उसके माँ-बाप हैं। वह मनुष्य ही है, स्त्री के कोख से पैदा हुआ है। समाज को उसे सम्मान देना चाहिए, बहिष्कृत करना नहीं। उनके साथ प्रेम से, मिल जुलकर रहना होगा, तभी उनमें जीने की आस निर्मित होगी।

पारिवारिक संघर्ष

किन्नर का संघर्ष समाज से नहीं, परिवार से शुरू होता है। कई स्त्रियों को अनेक वर्ष के पश्चात् संतान हो रही है। संतान हो, इसलिए स्त्री क्या-क्या करती है, उसे ही मालूम होता है। संतान किन्नर हुई तो उसका उपाय भी है। विश्व में चिकित्सा विज्ञान ने बहुत प्रगति की है। किन्नर संतान को परिवार से दूर करना उसका उपाय नहीं। उसके भविष्य के संदर्भ में सोचने की जरूरत है। समाज क्या कहेगा रिश्तेदार क्या सोचेंगे? हमारी इज्जत का क्या होगा? आदि प्रश्न गौण हैं खुद की संतान के सामने। पारिवारिक संघर्ष के संदर्भ में महेंद्र भीष्म 'किन्नर कथा' उपन्यास में कहते हैं,

''सामाजिक परिस्थितियों, खानदान की इज्जत-मर्यादा, झूठी शान के सामने अपने हिजड़े बच्चे से उसके जन्मदाता हर हाल में छुटकारा पा

लेना चाहते है।"3

लेखक ने 'सोना' नामक पात्र के माध्यम से किन्नर का संघर्ष दिखाने की कोशिश की है। उपन्यास का पात्र 'जगत सिंह' अपने खुद के बेटे 'सोना' को जान से मारने की कोशिश करता है, क्योंकि वह किन्नर है। वर्तमान में कई 'सोना' परिवार के प्रेम को तरस रहे हैं। किन्नर को समाज ने अपमानित किया तो ज्यादा दुःख नहीं होता, किंतु परिवार ने मुँह फेर लिया, तो बहुत दुःख होता है। वर्तमान में कई परिवार किन्नर संतान को परिवार का हिस्सा नहीं मानते। किसी चीज़ में उसे अधिकार नहीं मिलता। पारिवारिक समारोह में इच्छा होकर भी जा नहीं पाता। सिर्फ़ यादों में जीता है। उन्हें कोई सहारा नहीं देता। हर तरफ से मानसिक और शारीरिक शोषण होता है। परिवार के सदस्यों को मानसिकता बदलने की जरूरत है। वे अपनी संतान की वेदना नहीं समझेंगे, तो कौन समझेगा? मनुष्य को ऐसे संवेदनशील विषय पर चिंतन की जरूरत है।

विस्थापन संघर्ष

किन्नर समाज की भीषण समस्या है विस्थापन। किन्नर खुद घर से निकल जाते है, तो कभी उसे जबरन निकाला जाता है। दोनों अवस्था में संघर्ष ही है। बच्चा किन्नर है, समझ आने के पश्चात उस पर से प्रेम खत्म होता है परिवार एवं समाज का। उसके साथ परिवार के सदस्य, रिश्तेदार बुरा बर्ताव करते हैं। हर दिन के मानसिक और शारीरिक प्रताड़न से परेशान होकर कोई तो जान तक देता है। परिवार के छोड़ने के पश्चात समाज ज्यादा वेदना देता है। जीना मुश्किल कर देता है। मजबूरी में किन्नर समुदाय का डेरा खोजने की कोशिश करता है। वहाँ भी उसका मुखिया के द्वारा शोषण ही होता रहता है। उसका जीवन जीवित लाश बनकर रह जाता है। विस्थापन संघर्ष के संदर्भ में महेंद्र भीष्म 'किन्नर कथा' रचना में कहत हैं, ''प्रत्येक हिजड़ा अभिशप्त है, अपने ही परिवार से बिछुड़ने के दंश से। समाज का पहला घात यहीं से उस पर शुरू होता है। अपने ही परिवार से, अपने ही लोगों द्वारा उसे अपनों से दूर कर दिया जाता है। परिवार से विस्थापन का दंश सर्वप्रथम उन्हें ही भुगतना होता है।''4

वर्तमान में भी किन्नर समाज का विस्थापन संघर्ष दिखाई देता है। वे कहीं सुरक्षित दिखाई नहीं दे रहे। वे बेघर, लावारिस हैं मरते दम तक। उन्हें कोई सहारा नहीं देता। मजबूरी का फायदा उठाते हैं मनुष्य के रूप में रहनेवाले जानवर। समाज उनके लिए भले ही कुछ न करे, चलेगा! किंतु उनकी ज़िंदगी से तो न खेले। जिस दिन किन्नर समाज को सही में न्याय मिलेगा, तभी लोकतंत्र अस्तित्व में है, यह किन्नर को महसूस होगा।

आवास संघर्ष

किन्नर बेघर है वर्तमान में भी! उन्हें रहने के लिए भी कोई किराए पर घर नहीं देता। क्योंकि वे किन्नर हैं। किन्नर के रूप में जन्म लेना कोई गुनाह नहीं है। किसे लगता है कि मैं किन्नर बनूँ? वह नैसर्गिक प्रकिया है। वर्तमान में किन्नर को विवाह करने का कानूनन अधिकार है, किंतु समाज को मान्य नहीं। किसी व्यक्ति ने किन्नर से विवाह करने की हिम्मत की, तो उसे जीने नहीं देते। यह आज की वास्तव परिस्थिति है, इसे नकारा नहीं जा सकता।

वर्तमान में भी किन्नर को शिक्षित कॉलनी में रहने को घर नहीं मिलता। मजबूरन उन्हें गंदी समझी जानेवाली बस्ती में रहना पड़ता है। कुछ गलती न होन के बावजूद भी पुलिस प्रशासन द्वारा उन पर आरोप लगाए जाते हैं। अपमानित किया जाता है। वहाँ से भी बेदखल किया जाता है। प्रशासन उनकी मदद नहीं करता। संघर्ष ही उनके जीवन में निरंतर रहता है। वर्तमान समय में समाज को अपनी

मानसिकता बदलने की सख्त जरूरत है, तभी वे इन्सान बनकर जी सकते हैं। आवास संघर्ष के बारे में प्रमोद मीणा कहते है, ''कुछ हिजड़ परिवार की तरह समूह में भी रहते हैं, लेकिन रहने के लिए एक सुरक्षित घर खोजना हिजड़ों के लिए हमेशा एक चुनौती बनी रहती है। ज्यादातर मकान मालिक हिजड़ों को मकान किराए पर देते नहीं हैं। मकान मालिकों की बेरूखी से तंग आकर बहुत से हिजड़ों को गंदी, कच्ची बस्तियों में रहने पर मजबूर होना पड़ता है और वहाँ से भी उन्हें पुलिस प्रशासन द्वारा बेदखल किया जाता रहता है।''[5]

इक्कीसवीं सदी में भी अनुसूचित जाति, अनुसूचित जनजाति को अनेक शहर के प्रतिष्ठित समझे जानेवाले क्षेत्र में मकान नहीं मिलता। पैसों के कारण नहीं, जाति, धर्म के कारण। फिर वर्तमान में किन्नर समाज की क्या हालत होगी, यह समाज में झांककर देखने से समझ में आता है। किन्नर संघर्ष, मात्र कानून बनाने से खत्म नहीं होनेवाला, हीन मानसिकता नष्ट करनी होगी, तब उनका अस्तित्व समाज में निर्माण हो सकता है। यही समय की मांग है।

रोजगार संघर्ष

वर्तमान की ज्वलंत समस्या है रोजगार। उच्च शिक्षित होकर भी युवाओं के हाथ में काम नहीं हैं। किन्नर समाज को व्यवस्था ने पढ़ने नहीं दिया। कुछ किन्नर पढ़े-लिखे हैं, वे भी बेरोजगार हैं। शिक्षित व्यक्ति कुछ ना कुछ काम करके जीवन जीता है किंतु किन्नर को शिक्षित होकर भी कोई काम नहीं मिलता। मजबूरी में वे रेलगाड़ी, सिग्नल, बाजार, बच्चे के जन्म, विवाह आदि स्थान पर जा रहे हैं। वहाँ उन्हें कोई प्रेमभाव से नहीं बोलता। निरंतर अपमानित किया जाता है।

संघर्ष करके पढ़े-लिखे किन्नर उच्च पद पर कार्यरत होना चाहते है, समाज में बदलाव लाने। उनमें उच्च पद पर नियुक्त होने की पात्रता भी है, किंतु किन्नर होने से वहाँ तक वे नहीं पहुँच पाते। मजबूरी में अपनी पहचान छिपाकर पद हासिल करते हैं। कुछ दिनों के पश्चात उसके चाल-ढाल से वहाँ के अधिकारी को उसकी असली पहचान पता चलती है। कुछ भी कारण बताकर उसे वहाँ का मुख्य अधिकारी नौकरी से निकाल देता है। किन्नर की न्याय मांगते-मांगते ज़िंदगी गुजर जाती है, किंतु न्याय नहीं मिलता। किन्नर समाज के रोजगार संघर्ष के संदर्भ में प्रमोद मीणा कहते हैं, ''अपनी पहचान छिपाकर ये यदि कहीं रोजगार पा भी लेते हैं तो इनका हिजड़ा होने का खुलासा होने पर नियोक्ता इन्हें नौकरी से निकाल देता है। कार्यस्थल पर साथी, सहकर्मियों और मालिक आदि द्वारा इनके साथ मौखिक, दैहिक और यौनिक दुर्व्यवहार आम है और जिसके लिए इन्हें कहीं से न्याय भी नहीं मिल पाता। इनके चाल-चलन को कार्यस्थल की शुचिता के लिए खतरा मानकर इन्हें ही नौकरी से निकाल दिया जाता है।''[6]

वर्तमान में कुछ लोग दूसरे के नाम नौकरी कर रहे हैं, बल्कि किन्नर का सब सही होने के बावजूद उन्हें नौकरी नहीं मिलती। संविधान में सभी को समान अधिकार है, फिर भी उनके साथ अन्याय क्यों? यह चिंतन का विषय है। सिर्फ़ किन्नर समस्या पर लिखा साहित्य पढ़कर कुछ नहीं होगा, समस्या को समझकर खुद से कार्य करने की जरूरत है। कालांतर से समाज में भी बदलाव जरूर आएगा।

वेश्या वृत्ति एवं यौन हिंसा के विरुद्ध संघर्ष

किन्नर का जीवन वेश्या स्त्री से कहीं ज्यादा बदतर है। वे कहीं भी सुरक्षित नहीं। उनके साथ प्रेम भाव से कोई वार्तालाप नहीं करता। शिक्षा का अभाव, रोजगार की समस्या आदि का फायदा उठाकर उन्हें वेश्या व्यवस्था में खींचा जा रहा है। वर्तमान में अनेक डॉक्टर पैसों की खातिर लिंग

परिवर्तन करके दे रहे हैं। उनके शरीर के साथ पुलिस, वकिल, बिजनेसमैन, ड्राईवर, डॉक्टर आदि क्षेत्र के लोग खेलते हैं। शरीर और मन को नोचते हैं। किन्नर अनेक बीमारियों का शिकार बन रहे हैं। इन समस्याओं से वे निरंतर संघर्ष करते आए हैं। वर्तमान में भी कर रहे हैं।

वर्तमान में किन्नर के समक्ष यौन हिंसा भीषण समस्या के रूप में खड़ी है। कारण है सामाजिक असुरक्षा और नीच मानसिकता। किन्नर कहीं सुरक्षित नहीं है। करीबी रिश्तेदार भी जबरदस्ती करता है। उन्होंने चिल्लाकर भी बताया तो कोई विश्वास नहीं रखता। किन्नर को ही दोषी ठहराया जाता है। अनेक व्यक्ति उनका शरीर नोचना चाहते हैं, नोचते भी हैं, शारीरिक भूख भगाने के लिए। दोषी व्यक्ति के खिलाफ गुनाह दाखिल करने किन्नर जाते हैं, उनकी कोई परवाह नहीं करता। वे हर दिन की पीड़ा से परेशान होकर नशा करने लगे है। उन्हें खुद की ज़िंदगी स नफ़रत होनी लगी है। यौन संघर्ष के संदर्भ में चित्रा मुद्गल 'पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा' उपन्यास में कहती है, ''किवाड़ ठीक से बंद नहीं किया उसने या उसके सिटकनी चढ़ाने से पहले ही अपने चार दोस्तों के साथ बिल्लू किवाड़ खोल के कमरे में घुस आए। पूनम जोशी ने आपत्ति प्रकट की, कपड़े बदलने है, वे कमरे से बाहर जाएँ। भतीजे ने पूनम जोशी को दबोच लिया। कहते हुए, वे डरे नहीं, कपड़े वे बदल देंगे उसके। बस वह उनकी ख्वाहिश पूरी कर दे।''[7]

विधायक का भतीजा 'बिल्लू' किस तरह 'पूनम जोशी' से बर्ताव करता है, यह चित्रण लेखिका ने प्रस्तुत किया है। वर्तमान में कई 'पूनम जोशी' हवस की शिकार बन रही हैं। मजबूरी का फायदा उठाया जा रहा है। किन्नर पर अत्याचार होने के पश्चात भी उसे ही दोषी ठहराया जा रहा है। उसे न्याय नहीं मिलता समाज, न्याय व्यवस्था से। न्याय के लिए वर्तमान में भी वे संघर्ष कर रहे हैं। उन्हें इन्सान के रूप स्वीकार करना, उनके लिए सबसे बड़ा न्याय होगा।

निष्कर्ष:

वर्तमान में किन्नर समाज की समस्या पर चर्चा हो रही है। किन्नर के अधिकार को लेकर वैश्विक स्तर पर भी प्रयास हो रहे हैं। भारत में भी उन्हें तृतीय लिंग के रूप में मान्यता दी है। भारत में किन्नर समाज की आबादी लगभग पचास लाख है, तब भी वे हशिए पर रखे गए हैं। उनके साथ जानवरों जैसा व्यवहार किया जाता है । उनके अधिकार समाज उन्हें नहल्र देता। वे अंदर से तुट रहे हैं। किन्नर समाज पर वर्तमान में भी साहित्य लिखना जारी है,लोग पढ़ भी रहे हैं। सिर्फ़ आचरण में नहल्र ला रहे। जब वे विचार आचरण में लाएंगे तब किन्नर समाज सामान्य लोगों की तरह जीवन ज्ञापित करेगा।

किन्नर समाज की समस्या के तरफ सरकार को ध्यान देने की नितांत आवश्यकता है। साथ ही गैर-सरकारी संगठन को भी! विभिन्न माध्यमों द्वारा समाज की मानसिकता, सोच बदलने की जरूरत है तभी किन्नर समाज का विकास होगा। किन्नर समाज को सरकारी तथा गैर-सरकारी प्रशासन में आना जरूरी है। उनका प्रतिनिधित्व ही उनके विकास की शुरुआत है। जिस दिन किन्नर समाज को समाज के हर क्षेत्र में प्रतिनिधित्व मिलेगा, तभी किन्नर समाज पर लिखित साहित्य का उद्देश्य सफल होगा।

संदर्भ संकेत

1.नीरजा माधव, यमदीप, सुनील साहित्य सदन प्रकाशन, दिल्ली-110002, प्रथम संस्करण-2009, पृ.13

2. चित्रा मुद्गल- पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली-110001, प्रथम संस्करण-2016, पृ.30

3. महेंद्र भीष्म, किन्नर कथा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली-110001, प्रथम संस्करण-2016, पृ.45

4. महेंद्र भीष्म, किन्नर कथा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली-110001, प्रथम संस्करण-2016, पृ.42

5. डॉ.एम.फिरोज खान (संपादक) थर्ड जेंडर : कथा आलोचना, अनुसंधान पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रकाशन, कानपुर-208001, पृ.33

6.डॉ.एम.फिरोज खान (संपादक) थर्ड जेंडर : कथा आलोचना, अनुसंधान पब्लिशर्स एंड डिस्ट्रीब्यूटर्स प्रकाशन, कानपुर-208001, पृ.50

7. चित्रा मुद्गल, पोस्ट बॉक्स नंबर 203 नाला सोपारा, सामयिक प्रकाशन, नई दिल्ली-110001, प्रथम संस्करण-2016, पृ.110

सहायक प्राध्यापक हिंदी विभाग,
श्री आसारामजी भांडवलदार कला, वाणिज्य एवं विज्ञान महाविद्यालय, देवगांव (रंगारी),
तहसील-कन्नड, जिला-औरंगाबाद, (महाराष्ट्र)
पिन-431115, चलभाष् -9022561824

यशपाल निर्मल 'गुरु रतन सम्मान 2023' से सम्मानित।

डोगरी भाषा के प्रख्यात साहित्यकार यशपॉल निर्मल को बृज लोक साहित्य, कला एवं संस्कृति अकादमी, आगरा द्वारा वर्ष 2023 के लिए प्रतिष्ठित 'गुरु रतन सम्मान 2023' से सम्मानित किया गया, जिसकी घोषणा अकादमी के अध्यक्ष श्री मुकेश कुमार ऋषि वर्मा ने की, उन्होंने प्रेस के साथ यह जानकारी साझा करते हुए बताया कि यह कार्यक्रम सितम्बर, 2023 में आगरा में आयोजित किया जायेगा।

गौरतलब है कि यशपॉल निर्मल का जन्म 15 अप्रैल 1977 को जम्मू-कश्मीर के सीमावर्ती इलाके ज्यौड़ियां के गढ़ी बिशना गाँव में हुआ था। इन्हें डोगरी, हिंदी, पंजाबी, उर्दू और अंग्रेजी भाषाओं का ज्ञान है। वह कई भाषाओं में अनुवाद का काम कर रहे हैं।

यशपॉल निर्मल ने अपने लेखन की शुरुआत वर्ष 1993 में और अनुवाद की शुरुआत 1994 में श्रीमद्भागवत पुराण का डोगरी भाषा में अनुवाद करके की। अब तक विभिन्न विषयों पर उनकी 65 से अधिक पुस्तकें हिंदी, डोगरी और अंग्रेजी भाषाओं में प्रकाशित हो चुकी हैं। उनके अतुलनीय योगदान के लिए, उन्हें कई सम्मान और पुरस्कार प्राप्त हुए हैं, जिनमें सी.सी.आर.टी., नई दिल्ली द्वारा जूनियर फेलोशिप, साहित्य अकादमी, नई दिल्ली द्वारा वर्ष 2014 के लिए नाटक 'मियां डीडो' पर राष्ट्रीय अनुवाद पुरस्कार और आओ ख़ुशियाँ भेंटें मंच द्वारा उनकी पुस्तक '1008 डोगरी हाइकू' के लिए 'सिया राम स्मृति पुरस्कार' प्राप्त हैं।

अधूरी इच्छा

-आकांक्षा यादव

आज शाम से ही उमा आँसुओं की बरसात में भीगी जा रही थी। रमेश के बार-बार समझाने पर भी उसका मन नहीं बहल रहा था। बस बार-बार वह उस पल को कोस रही थी जब उसने अल्ट्रासाउंड कराकर भ्रूण की हत्या करवाई थी।

आज भी उसे वह दिन अच्छी तरह याद है जब उसने सुना कि उसके गर्भ में लड़की है तो उसने अपनी डॉक्टर से कहा कि उसका अबॉर्शन करवा दें। डॉक्टर ने उसे समझाया भी कि यह उसकी सेहत के लिए अच्छा नहीं होगा और अबॉर्शन कराना गलत है, पर उस पर तो मानो पागलपन सवार था।

अंततः उसने एक दूसरी डॉक्टर को ढूँढ़ ही लिया, जो पैसे लेकर अबॉर्शन करती थी। कितनी खुश थी वह उस दिन, मानो अपना अंश नहीं बल्कि शरीर का कोई फोड़ा निकलवाकर आई हो। चहकते हुए उसने रमेश से कहा था कि इस बार हम शुरू से ही पूरा ध्यान रखेंगें कि लड़का ही पैदा हो।

वक्त पहिये लगाकर चलता रहा। जब कई महीने बाद भी उसे गर्भ नहीं ठहरा तो डाक्टर के पास पहुँची। डाक्टर ने उसके कई चेक-अप कराये पर होनी को कुछ और ही मंजूर था। डाक्टर ने उसे गौर से देखा और कहा, ''सॉरी! पर अब आप कभी माँ नहीं बन सकतीं।"

"......लेकिन डॉक्टर साहिबा, भला ऐसा कैसे हो सकता है ?''

"मैंने तो आपका पहले ही समझाया था पर आप नहीं मानीं......''

ऐसा लगा मानो उसके ऊपर वज्रपात हो गया हो, उसका सारा शरीर सुन्न सा पड़ गया। उसके सारे अरमान एक ही पल में बिखर गए। अगर उस दिन यह भारी भूल न की होती तो आज वह भी माँ बन चुकी होती। लेकिन अब तो ताउम्र यह बाँझपन उसके साथ रहेगा।

अचानक उसे लगा कि कोई उससे चीख-चीख कर कह रहा है, "आखिर तुमने मुझे क्यों मारा, मैं भी तो तुम्हारा ही अंश थी।''...उसने अपना चेहरा दोनों हाथों के बीच छुपा लिया और जोर-जोर से रोने लगी। डॉक्टर ने उसे ढांढस बँधाया था।

उसने सिसकते हुए यही कहा था कि, ''डॉक्टर साहिबा, मेरी आपसे एक विनती है कि अब आपसे कोई भी माँ कभी अबॉर्शन के लिए कहे तो उसे मेरी ये दास्तां जरूर सुनाना। हो सकता है मेरी ये दुर्दशा समाज को आइना दिखा सके और उसके हाथों होने वाले पाप से मैं मुक्त हो जाऊँ।"

पोस्ट मास्टर जनरल आवास
नदेसर, कैंट, प्रधान डाकघर,
वाराणसी-221002

स्टेटस सिंबल –शुचि 'भवि'

देख मेरी बहन ने मुझे चांदी की राखी बाँधी और तू दिखा न अपनी राखी?

मदन ने जैसे ही राघव का हाथ देखना चाहा, राघव ने अपना हाथ पीछे कर, छुपा लिया। रक्षाबंधन की शाम को बाग़ीचे में इकट्ठे हुए बच्चों की बात सुनकर बेंच पर बैठे वृद्ध ने उन्हें अपने पास बुला कर पूछा, हम रक्षाबंधन का त्यौहार क्यों मनाते हैं, कौन बताएगा।

राघव ने धीरे से कहा, मैं बताऊँ। हाँ ज़रूर पर पहले मदन बताएगा, उसकी राखी चाँदी की है न इसलिए।

मदन ने खुश होते हुए कहा, हाँ मुझे मालूम है, ''इस दिन सब बहनों को राखी बाँधने पर गिफ़्ट मिलता है और हम सब मिलकर मॉल जाते हैं, बाहर खाना खाते हैं, मूवी देखते हैं, मस्ती करते हैं और हाँ किसकी राखी सबसे सुंदर है यह भी देखते हैं।"

मदन की आँखों में चमक थी, कि उसने सही उत्तर दिया।

अब तुम बोलो राघव, वृद्ध ने सकुचाए से खड़े राघव से कहा।

''दादी कहती हैं कि, रक्षा बंधन का त्यौहार भाई-बहन के प्यार व भाइयों द्वारा बहनों की रक्षा के प्रतीक के रूप में मनाया जाता है। इस दिन बहनें, भाइयों को राखी बांधती हैं और उन्हें मिठाइयाँ खिलाती हैं। वहीं, भाई इस दिन बहनों की रक्षा का वचन देते हैं। महँगी राखी खरीदने मना करती हैं, कहती हैं रक्षा सूत्र स्टेटस सिंबल नहीं होता, पवित्र धागा होता है, द्रोपदी के आँचल के टुकड़े जैसा, जिसने कृष्ण जी की घायल उँगली पर बंधकर सदा सदा के लिए रक्षा कवच ले लिया था।"

वृद्ध ने राघव के सर पर आशीर्वाद का हाथ फेरा और मदन से पूछा, क्या तुम यह सब जानते थे, जो राघव ने बताया।

मदन ने न में सिर हिला दिया और दूसरे बच्चों की राखी देखने के लिए दौड़ गया।

राघव तुम्हारी दादी बिल्कुल ठीक कहती हैं, त्यौहारों को स्टेटस लसबल नहल़ होना चाहिए। उन्हें मेरा धन्यवाद कहना, त्यौहारों को बचाने हेतु।

भिलाई, छत्तीसगढ़

मजदूर दिवस

–रश्मि सिंह

''चल सोनू! आज तुझे तेरे बाबा स्कूल छोड़ने जाएंगे।" मोहन ने कहा।

''क्यों बाबा! आज आपको काम पे नहीं जाना?" सोनू ने जिज्ञासा से पूछा।

''नहीं बेटा आज के दिन मजदूरों को काम से आराम दिया जाता है। उनका सम्मान किया जाता है। मजदूर दिवस है न आज बबुआ।"

''अच्छा...अच्छा! मैडम ने पढ़ाया था हमको।" कहकर दोनों बाप बेटे निकल गये।

बेटे को स्कूल छोड़ कर मोहन घर आकर पत्नी सुनयना के काम में हाथ बँटाने लगा। सुबह से देर शाम तक दिहाड़ी मजदूरी करके घर चलाने वाले मोहन को आराम और छुट्टी कतई नहीं सुहा रही थी। आज की छुट्टी उसके लिए आराम और सम्मान का नहीं, चिंता का सबब थी। दिहाड़ी मजदूर था वह, उसके हिस्से एक भी वैतनिक छुट्टी नहीं आती थी।

आज सरकारी नियम के तहत उसे काम पर आने से तो मालिक ने मना कर दिया पर साथ ही उसकी आज की मजदूरी भी उसे नहीं दी जाएगी यह उसे पता है। किसी पर्व-त्यौहार में भी पैसा कट जाने के डर से छुट्टी न करने वाले मोहन को हर साल मजदूर दिवस बेहद भारी पड़ता था।

राँची, झारखंड
मोबाइल नं 8986619388

तेरी बिंदिया रे

रश्मि लहर

प्रेरणा को बचपन से पूजा-पाठ करना, सजना-संवरना बहुत पसंद था। एक तरफ पढ़ने में टॉपर तो दूसरी ओर इतनी सुन्दर! उसपर जब वो अपने दमकते माथे पर छोटी सी बिंदी लगाती थी तब तो बस एकदम अनुपम रूप निखर आता था उसका।

देखते ही देखते वो सुप्रसिद्ध भल्ला खानदान की बहू बन गई.. बखूबी अपनी ज़िम्मेदारियों को निभाते- निभाते वह दो प्यारी सी बेटियों की माँ भी बन गई।

चारों तरफ उसके रूप और गुणों की बातें होती थीं..कि सहसा एक दिन उसके माथे पर कुछ खुजली सी शुरू हो गई। लाल निशान और चकत्ते उभर आए.. डाक्टर दवा तो देते पर फायदा जरा भी न होता। परिवार सदमें में तब आया जब एक बड़े अस्पताल की रिपोर्ट में स्किन कैंसर निकल आया।

मायका.... ससुराल..चारों तरफ हाहाकार मच गया.. रेडियो थेरेपी के कारण चेहरा भयानक हो चुका था, इतनी बुद्धिमान स्त्री..समय की मार को झेलकर एकदम बदल चुकी थी!

धीरे-धीरे वह ठीक तो हो रही थी.... पर हर वक्त रोती रहती और अपने श्रृंगार के सामानों को छू-छू कर देखती, तिल-तिल कर घुटने लगी थी वह।

उसको अथाह प्रेम करने वाला जीवनसाथी मिला था, परन्तु वह भी इस सदमे से धक से रह गया था! पर, कहते हैं ना कि समय कभी एक सा नहीं रहता। उसके पति ने उसकी सोच को पुनः सकारात्मक दिशा की ओर मोड़ने की योजना बनाई।

उसके घर में ही गरीब लोगों के लिए एक दुकान खोल दी गई, जहाँ अन्य सामान के साथ ही एक बिंदी का पत्ता बिना मूल्य दिया जाता था। सिंदूर के कोई पैसे नहीं लिए जात। इस अनोखे प्रयास से उनकी दुकान में हर समय भीड़ लगी रहती थी।

प्रेरणा की एक छोटी सी राय महिलाओं की सुंदरता में चार चांद लगा देती थी।

धीरे-धीरे प्रेरणा स्वस्थ होने लगी थी। उसकी दुकान की चर्चा और उसके व्यवहार की बातें दूर-दूर तक फैल चुकी थीं। कहते हैं ना कि जब आपकी सोच उत्तम हो, प्रयास निश्छल एवं सकारात्मक हों तो कायनात भी आपका दुःख दूर करने में लग जाती है!

गरीबों के आशीर्वाद का प्रभाव था या प्रेरणा का भाग्य, उसकी बीमारी ठीक हो चुकी थी। पर उसने अपनी दुकान पूर्ववत चलने दी।

आज पूरे दो वर्ष के इलाज के बाद प्रेरणा शरद पूर्णिमा के पावन दिवस की पूजा करने के लिए तैयार होकर कमरे से निकली तो उसके पति ने भावुक हो कर उसको गले से लगा लिया और कानों में धीरे से कहा,

''बहुत सुंदर लग रही हो प्रेरणा!"

बहुत दिनों बाद अपने लिए ऐसी बात सुनकर प्रेरणा लाज से लाल हो गई..तभी उसके कानों में आवाज पड़ी..

''तेरी बिंदिया रे.. "

उसने पीछे मुड़कर देखा तो चौंक पड़ी! उसकी दुकान का नामकरण हो गया था। दोनों बेटियाँ बैनर लिए जा रही थीं, जिसपर लिखा था 'तेरी बिंदिया रे' और प्रेरणा! वो तो बस दुकान का नाम पढ़कर खुशी से रो पड़ी थी।

इक्षुपुरी कालोनी,
लखनऊ -2
उत्तर प्रदेश
मो.9794473806

मणिपुर के नुपी लैन (नारी-संघर्ष) में हिजाम इराबत का योगदान

डॉ. येंखोम हेमोलता देवी

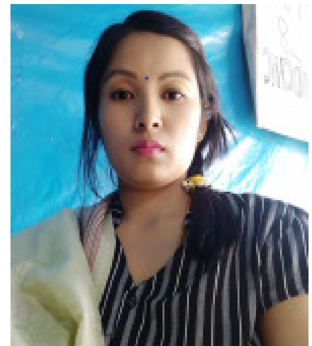

मणिपुर सन् 1891 से पहले राजतंत्र द्वारा शासित एक स्वतंत्र देश था लेकिन खोङ्जोम युद्ध में भीषण हार का सामना करने के बाद यह ब्रिटिश साम्राज्य के अधीन हो गया था। जैसा कि अक्सर युद्ध में जीत हासिल करने के बाद अपनायी जाने वाली दमन नीति के चलते होता है, यही मणिपुर के साथ भी हुआ। अंग्रेजों के अत्याचार से उन दिनों मणिपुर निवासी जनमानस के जीवन में उथल-पुथल मच गयी थी।

मैतेई परिवार की हिजाम उपजाति में जन्में बालक को इराबोट नाम दिया गया। हिजाम इराबोट का जन्म 30 सितंबर 1896 को हुआ था।[1] हिजाम लीका में हिजाम इबुनगोहल सिंह और चोंगथम निंगोल थम्बलंगंबी के घर याइस्कूल पुलिसलेन मणिपुर राइफलस् कॉलोनी हुआ था।

अंग्रेजों द्वारा इम्फाल के कई स्थानों को हथियाते हुए वहाँ बसे लोगों को वहाँ से भगाया गया था। इसी दौरान इराबत के माता-पिता को भी अपने जन्म स्थान छोड़कर शरणार्थी बनकर अपने एक संबंधी प्रसिद्ध मृदंगगुरु श्री हिजाम लोकनाथ सिंह के यहाँ नम्बूल मपाल पिशुमथोङ ओइनाम लैकाइ में आना पड़ा था। इसी संकटकाल में इराबोट का

जन्म हुआ। जीविकोर्पाजन के लिए इनके पिता को बर्मा जाना पड़ा। दुर्भाग्यवश लौटने के बाद जल्दी ही उनकी मृत्यु हो गई। अपने पिता की मृत्यु के बाद, वह अपनी माँ के साथ मोइरांगखोम सवा जम में अपनी चाची के पास रहने चले गये। उन्होंने जॉनस्टोन हायर सेकेंडरी स्कूल, इम्फाल, मणिपुर (कांगला किले के पश्चिमी किनारे पर स्थित) में कक्षा 7 तक पढ़ाई की और दो छात्र निकायों, बाल संघ और छात्र सम्मेलन की स्थापना की। 1913 में, वह अपने चचेरे भाई, सवा जाम सोमोरेंड्रो के साथ ढाका गए और कक्षा 9 तक पढ़ने के लिए पुगोज हाई स्कूल में भर्ती हुए। 1915 में, अपर्याप्त धन के कारण उन्होंने पढ़ाई छोड़ दी और अगरतला चले गए। उस वर्ष बाद में, जब वह मणिपुर वापस आए, तो उन्होंने पाया कि उनकी माँ की मृत्यु हो गई थी।

मणिपुर का प्रथम नुपी लाल अर्थात नारी संघर्ष सन् 1904 ई. में घटित हुआ था।[2] यह घटना ब्रिटिश साम्राज्य में ठीक 13 वर्ष के शुरूआती दौर में हुई थी। अंग्रेजों द्वारा मणिपुर को हथियाने के बाद यहाँ की जनता को अनेक कष्ट, दु:ख एवं कठोर अत्याचारों का सामना करना पड़ा था। मणिपुर में औपनिवेशिक अधिकारियों के खिलाफ महिलाओं के नेतृत्व में दो प्रदर्शन हुए थे।

1904 में, तत्कालीन पुलिस एजेंट के बंगले में अचानक ही आग लग गई थी। हालाँकि यह आग असावधानी की ओर तो इशारा करती है लेकिन ब्रिटिश साहबों को इस घटना से संबंधित कोई सुराग न मिलने पर भी इसका इलजाम इम्फाल एरिया में बसे लोगों पर लगाया। यही नहीं, इस दुर्घटना को यहाँ के लोगों द्वारा किए गये षडयंत्र का एक रूप मानते हुए यहाँ की आम जनता को दण्ड स्वरूप बंगले की चीजों का हर्जाना भरवाने का आदेश निकाला गया। साथ ही यह हुक्म भी जारी किया कि नये बंगले के बनाने में जितनी भी सामग्री लगने वाली है उसकी जनता को भरपाई करनी पड़ेगी। बंगले के पुनर्निर्माण के लिए लकड़ी लाने के लिए मणिपुरी पुरुषों को काबो घाटी में भेजने के औपनिवेशिक अधिकारियों के आदेश के जवाब में पहला नुपी लाल शुरू हुआ।

इस समय हिजाम इराबोट केवल आठ वर्ष के थे। उन्होंने खुदै (मैतेई पुरुषों द्वारा पहने जाने वाली लुंगी) और कुर्ते में बिना डरे नुपी लाल में भाग लिया।[3] उनके इस मासूम चहरे के पीछे छिपे विप्लवी को देखकर उस दिन उसे ढूँढ़ने निकले व्यस्क भी अचम्भित हो गये थे। इतनी-सी कम उम्र में ही अपनी मातृभूमि के प्रति पनप रहे देशप्रेम की भावना को हम देख सकते हैं।

यह जननेता हिजाम इराबोट जैसे नेताओं के राजनीतिक जीवन के लिए एक महत्वपूर्ण मोड़ था। द्वितीय नुपी लाल अर्थात् नारी-संघर्ष 12 दिसम्बर 1939 ई. से शुरू हुआ था।[4] यह नारी-संघर्ष तत्कालीन मणिपुर सरकार के विरुद्ध मणिपुर की महिलाओं द्वारा उठाया गया बहुत बड़ा कदम था जो भारत भर में चर्चित है जो चावल के संबंध में आरम्भ किया गया था। इस मुद्दे का संबंध वर्ष 1939-40 के मणिपुर स्टेट एडमिनिस्ट्रेशन रिपोर्ट से है जिसके अनुसार उस वर्ष असमय खूब बारिश एवं ओले गिरने के कारण खेती-बाड़ी में भारी नुकसान का सामना ही नहीं हुआ बल्कि अन्य फसलें भी तहस-नहस हो गई थीं। धान का उत्पादन बहुत ही कम होने के कारण मणिपुरी जनता में हाहाकार मचा हुआ था। अकाल जैसी स्थिति बन गई थी।

ठेकेदार स्थिति को देखते हुए चावल से गोदाम भर रहे थे ताकि चावल बाहर भेजा जा सके। इससे बाजार में चावल की कमी हो गई और दाम भी बढ़ गए और लोग भारी परेशानी झेलने लगे। परन्तु ठेकेदार चावल का निर्यात कर रहे थे, जिसकी शिकायत 13 सितम्बर को जनता द्वारा स्थानीय

राज दरबार के अधिकारियों तक पहुँचाई गई और कहा गया कि चावल को बाहर न भेजा जाए, परन्तु कोई लाभ नहीं हुआ।[5] (इस समय तक वहाँ चूड़ा चंद सिंह मणिपुर के राजा के थे)

दिसम्बर के दूसरे सप्ताह तक आते-आते चावल को बाहर भेजने के इस रोक-थाम की गतिविधि में उत्तेजना शुरू हुई। ग्यारह दिसम्बर को दो हजार महिलाओं ने स्टेट दरबार में जाकर तत्काल चावल भेजने के इस कार्य को बंद करने के लिए निवेदन किया। लेकिन उस दिन दरबारी अध्यक्ष मौजूद न होने के कारण फिर अगले दिन आने के लिए कहा गया। तत्पश्चात् महिलाओं ने बाहर भेजने के लिए धान-चावल से लदी हुई गाड़ियों को रोकना शुरू किया। फिर, 12 दिसम्बर को सुबह दस बजे के आसपास लगभग चार हजार महिलाएँ मणिपुर स्टेट दरबार में आ पहुँची और अध्यक्ष (टी.ए.शार्प)[6] को बाहर चावल भेजने एवं चावल की मिलों पर पाबंदी लगाने के लिए शिकायत की। लेकिन अध्यक्ष द्वारा कहा गया कि अभी महाराज तीर्थ-यात्रा पर नवद्वीप गए हुए हैं और बिना उनके स्वीकृति के कुछ भी नहीं हो सकता यहाँ तक कि चावल भेजना, एजेंट की नियुक्ति और मिल का परमिट भी उनके आदेशानुसार ही होता है। महिलाओं के लगातार जोर देने पर एजेंट ने कहा कि वह महाराज को तार देकर इसकी सूचना दे सकता है।

तब महिलाओं ने तय किया कि महाराज को सूचना देने और वहाँ से उत्तर आने तक वे वहीं रहेंगी और वहाँ से बिल्कुल नहीं हटेंगी और न ही सरकारी अध्यक्ष को जाने देंगी। महिलाओं ने अध यक्ष के साथ उनके अंगरक्षक असम राइफल्स के कमाण्डर मेजर बुलफील्ड एवं सविल सर्जन मेजर कम्मिन्स को भी घेर लिया।[7] इस पर महिलाओं और सरकारी अधिकारियों के बीच कहासुनी भी हो गई। परिणाम स्वरूप ब्रिटिश कमाण्डर मेजर बुलफील्ड की कमान में जैसे युद्ध की स्थिति हो उन महिलाओं के सामने आ पहुँचे और उन निहत्थी महिलाओं पर लाठीचार्ज एवं संगीनों से आक्रमण किया।[8]

नि:शस्त्र एवं शांतिपूर्वक पेट की भूख के लिए माँग कर रही उन महिलाओं पर तनिक भी दया न दिखाते हुए उन्हें क्रूरतापूर्वक पीटा। यहाँ तक कि उनको जूते-बूट से मसला भी गया। इस भयंकर आक्रमण से घटनास्थल पर यानी टेलिग्राफ ऑफिस के प्रांगण में इस प्रदेश की महिलाओं को लहू लुहान किया गया और इसमें 25 महिलाएँ तो बुरी तरह घायल हो गई थीं। ऐसी भयंकर स्थिति में भी साहस के साथ खड़ी होकर नेतृत्व करने वाली महिलाओं में श्रीमती तोङ्म सबी देवी, रजनी, कुमारी, लैबाक्लै एवं सनातोम्बी आदि हैं। उस दौर के मणिपुर पुलिस इन्सपेक्टि खोमद्राम धनचन्द्र ने सबी की छाती पर लात मारी और जब वह गिर गई तब भी अपने जूते से बार-बार लात मारता रहा।[9] इसी प्रकार द्वितीय नुपी लाल का संबंध 12 दिसम्बर को टेलिग्राफ ऑफिस में घटित इस घटना विशेष से है। इस संघर्ष में मणिपुरी जनता, विशेषकर स्त्रियों ने अंग्रेजों की क्रूर नीतियों व अत्याचारों के कारण पनप रहे असंतोष एवं क्रोध को वीरांगनाओं की तरह डटे रहकर सामना किया। उनके इस बलिदान की याद में हर वर्ष 12 दिसम्बर को नुपी लाल दिवस मनाया जाता है।

इस द्वितीय संघर्ष के समय इराबत मणिपुर से बाहर कछाड़ में एक बड़े आयोजन के लिए गए हुए थे, हालांकि यह संघर्ष उनकी अनुपस्थिति की उपज था और रियासती सरकार ने सोचा था कि चावल को बाहर भेजना बंद करने वर यह आन्दोलन अपने आप शान्त हो जाएगा पर ऐसा नहीं हुआ और आन्दोलन उग्र होता गया। फिर इस आन्दोलन का नेतृत्व करने के लिए इराबत को

तार देकर बुलाया गया।

कार्यकारिणी की बैठक बुलाई गई उनके मेम्बरों के बीच मतभेद उत्पन्न होने के कारण महासभा के कार्यकारिणी में अल्पमत वाले सद्स्यों का एक बैठक इराबत के घर में हुई थी। उसी बैठक में इराबत ने भारतवर्ष में ब्रिटिश साम्राज्य के खिलाफ़ चल रहे स्वाधीनता आन्दोलन से लोगों को अवगत कराते हुए यह कहा कि हमें भी इस मौके का फ़ायदा उठाना चाहिए। उभरती स्थिति को परखते हुए तुरंत एक पब्लिक बैठक करायी गयी जिसमें उन्होंने नारी संघर्ष को प्रोत्साहन देते हुए एक लंबा भाषण भी दिया था। इस सभा में लोगों ने एकमत होकर नारी संघर्ष का निदेशन करने के लिए इराबत की अध्यक्षता में प्रजा सम्मेलनी नामक एक विप्लवी दल की स्थापना की। उसके बाद महिला सम्मेलनी की स्थापना करते हुए ब्रिटिश सम्राज्य के खिलाफ़ लगातार संघर्ष करते गये। इराबत के नेतृत्व में उस समय मणिपुर में स्थित 18 मिलों को आन्दोलन के फलस्वरूप जड़ से उखाड़ फेंका। चावल का निर्यात बंद करने में जनता की विजय हुई।[10] इस नारी संघर्ष को काबू में करने ने लिए तत्कालीन सरकार ने सीआरपीसी धारा 144 लगा दी परन्तु इसका भी कोई फर्क न पड़ता देख सरकार ने नारी संर्घष पर काबू पाने के लिए इराबत को पकड़ने का निर्णय लिया और 1940 में एक सभा में अंग्रेज विरोधी भाषण देने के अपराध में इराबत को पकड़ लिया गया।[11]

हम देख सकते हैं कि हिजब इराबत का जीवन विषम परिस्थितियों में गुजरा। बचपन से ही उनके स्वभाव में विप्लव की झलक दिखाई देने लगी थी। तभी तो एक बच्चा अपनी मातृभूमि के शत्रुओं की कतार पर पत्थर फेंक सकता है। इराबत ने नुपीलाल को साकार रूप देने में विशेष भूमिका निभाई है।

इराबत के जीवनकाल में घटे घटनाक्रम में नुपीलाल ही एक ऐसी घटना है जो मणिपुरी समाज में हो रहे अत्याचार गंदगी से भरी जगह, जिसमें पैर रखने के लिए भी स्थान शेष नहीं बचा था, उन सभी को जिस तरह बाढ़ आने पर सब गंदगी अपने में समेटकर बहा ले जाती है, वैसे ही समाज में

एक नया परिवर्तन लाते हुए भविष्य में हमारी सामाजिक, आर्थिक एवं राजनैतिक स्थिति में एक नया परिवर्तन लाने में नारियों के दायित्वों को याद दिलाती है। इराबत ने नारी संघर्ष के इस इतिहास को सदैव लोगों के दिलों में बरकरार रखने का संदेश दिया है। अस्तु: इस संबंध में 'इमागी पूजा' (माँ की पूजा) नामक उनकी कविता से निम्न पंक्ति देख सकते हैं,[12]

ङसि अहिङ लेल्ले,
नुमिट् अमा चटख़े,
शम पुनशिल्लुदेवी
इफा फाररबदो।
दिसेम्बर 12 अमा हौख़े,
दिसेम्बर 12 अमा लाक्ले,
काउरब्रा?
थाजब्रा शम पुनगनि हायबा?
निङब्रा नुमिट् असि लाक्कनि हायबा?

(अर्थात् आज रात बीत गई, एक दिन चला गया, बाल बाँधो देवी जो बिखरे हुए हैं। एक 12 दिसम्बर चला गया, एक 12 दिसम्बर आ गया, भूल गए हो क्या? क्या विश्वास था बाल बाँध पाएँगे? क्या कामना की थी इस दिन के आने की?

संदर्भ

1. सोयाम छत्रधारी सिंह , मणिपुरगी इतिहासता इराबत, सोयाम पब्लिकेशनस, काङबम लैकाइ, इम्फाल-795001, मणिपुर, प्रथम संस्करण: 1972, पृ. 2।

2. वही, पृ. 3 ।

3. वही, पृ. 4 ।

4. उपरोक्त वही, पृ. 53 ।

5. लाङ्गोन इबोयाइमा, इराबतु: मीट्येङ अमा, एपोल्लो लाङ्गोन्जम (नोहाखोलगीदमक), मोङशाङ्गै नम्बूल मपाल, इम्फाल- 795003। (मणिपुर), प्रथम संस्करण, सितम्बर 29, 2008, पृ.66।

6. वही, पृ. 67 ।

7. उपरोक्त वही ।

8. सोयाम छत्रधारी सिंह, मणिपुरगी इतिहासता इराबत, सोयाम पब्लिकेशनस्, काङबम लैकाइ, इम्फाल-795001, मणिपुर, प्रथम संस्करण 1972, पृ. 54।

9. लाङ्गोन इबोयाइमा, इराबतु: मीट्येङ अमा, एपोल्लो लाङ्गोन्जम (नोहाखोलगीदमक), मोङशाङ्गै नम्बूल मपाल, इम्फाल- 795003। (मणिपुर), प्रथम संस्करण, सितम्बर 29, 2008, पृ. 67।

10. मोइराङथेम राजेन्द्र सिंह, अनौबा मणिपुरगी लमयानबा अहुम, मणिपुर साहित्य समिति, थौबाल, मणिपुर, प्रथम संस्करण: अक्तूबर 1, 2006, पृ.10।

11. सोयाम छत्रधारी सिंह , मणिपुरगी इतिहासता इराबत, सोयाम पब्लिकेशनस्, काङबम लैकाइ, इम्फाल-795001, मणिपुर, प्रथम संस्करण: 1972, पृ. 56।

12. लाङ्गोन इबोयाइमा, इराबतु: मीट्येङ अमा, एपोल्लो लाङ्गोन्जम (नोहाखोलगीदमक), मोङशाङ्गै नम्बूल मपाल, इम्फाल- 795003 (मणिपुर), प्रथम संस्करण: सितम्बर 29, 2008, पृ. 72 ।

इम्फाल, मणिपुर
मोबाइल नं. 8131948077

अंजना छलोत्रे 'सवि'

हम हैं रूठे तो मना लो हमको,
हँस के सीने से लगा लो हमको।

आरजू कह रही है दिल की ये
आज वादों से न टालो हमको।

हट गए राह के पत्थर देखो,
अपने दिल में तो बिठा लो हमको।

बेसबब रूठने से क्या होगा,
साथ चलकर ही मना लो हमको।

करके इजहारे वफा क्या पाया,
हो सके दिल से निकालो हमको।

जिस तरह तुमने सँभाला था कल,
आज फिर आ के सँभालो हमको।

कह रहा दिल ये सनम दीवाना,
जिस तरह भी हो निभा लो हमको।

दर्द बढ़ने लगा है हद से अब,
टूट जाएँ न बचा लो हमको।

मुझको दिलबर ने सताया देर तक
प्यार का खंजर चलाया देर तक

कसमसा कर रह गए मेरे रकीब
हाथ उनके कुछ न आया देर तक

चूर होते ही मेरे सपने रहे
पर वो ख्वाबों में न आया देर तक

ये तुझे दुनिया बता क्या हो गया
आदमी इक मिल न पाया देर तक

खंजरों को यूँ न अब चमकाइए
याँ शिकारी लड़खड़ाया देर तक

डोर रिश्तों की भला सम्भलेगी क्या
छल कपट ने जब लुभाया देर तक

बंधनों के तार सारे तोड़ कर
तुमको हमने फिर बुलाया देर तक

सर्द गुजरी रात सारी ही श्सविश
दर्द ने दर खटखटाया देर तक ।

जी-48, फारच्यून ग्लोरी, ई-8, एक्सटेंशन,
द्वितीय तल, भोपाल-39 (म.प्र.)
मो. 08461912125
□□□□□□.□□□□@□□□□□.□□□

खेत की कोख

–सूर्य प्रकाश मिश्र

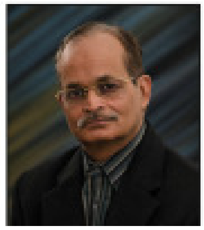

मन भर अनाज के बदले में
ये कोख खेत की बन्धक है
कैसे जीते जीने की जिद
अब मौसम भी खलनायक है

तिल-तिल कर चुकते धीरज का
संसार हो चला है छोटा
कब तक सींचेंगे उम्मीदें
पड़ गया आँसुओं का टोटा

दिन रोते उत्तम खेती के
लग गई जड़ों में दीमक है

तय है जिनकी जिम्मेदारी
वो बैठे दूर किनारों पर
मढ़ दिया दोष इस हालत का
कुछ दिशाहीन पतवारों पर

इस परिवर्तन से परेशान
रो रहा कुएं का मेंढक है

खेती से अपने रिश्तों को
झींगुर गा रहे सिवानों पर
टकटकी लगाये गिद्ध खड़े
खेतों में बँधी मचानों पर

सुनकर रिश्तों का समीकरण
विषधर समाज भी भौंचक है

मुँह लगे वायदों की घुट्टी
थपथपा रही है पेटों को
बेवफा हो गये सावन की
अब भी तलाश है खेतों को

अधखुली टांग की धोती का
आराध्य हुआ जनसेवक है

बी 23/42ए के, बसन्त कटरा (गाँधी चौक)
खोजवा, दुर्गाकुण्ड, वाराणसी 221001
मो.9839888743

कब तक धीर धरुं

महेश शर्मा

कब तक धीर धरुँ ?
कब खोलोगे मुक्ति द्वार ये
छूटेगा कब कारागार ये
हर दिन आस करूँ
-----कब तक धीर धरुँ ?

एक एक दिन मुश्किल है जीना
गरल वेदना का है पीना
असमय क्यूँ ना मरुँ ।
----- कब तक धीर धरुँ ?

तेरी दया को अँखिया तरसी
रहमत अब तक क्यूँ ना बरसी
ठंडी सांस भरुँ ।
----- कब तक धीर धरुँ ?

नटवर नागर अब तो आओ
संकट मेरे दूर भगाओ
तुझसे ही आस करूँ ।
---कब तक धीर धरुँ ?

224 सिल्वर हिल कालोनी धार
जिला धार म. प्र .
मो न . 91.9340198976